एस के आर ए यू : इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में विद्यार्थियों ने दी जोरदार रंगारंग प्रस्तुतियां

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 29 अप्रैल से 1 मई तक चल रहे इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल के दूसरे दिन हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्टूडेंट्स ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट , पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी।

डॉ वीर सिंह यादव ने बताया कि युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर की अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजलि राजपुरोहित और रानु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हल्का स्वर एकल गीत(इंडियन) में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज बीकानेर के रौनक खत्री, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल और तीसरे स्थान पर आईएबीएम बीकानेर के विनोद कुमार रहे।

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर , दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट्स और तीसरे स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के स्टूडेंट्स रहे।

कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिकल विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स और दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट रहे।

सहायक सांस्कृतिक समन्वयक व लाइजन ऑफिसर डॉ वाई के सिंह ने बताया कि यूथ फेस्टिवल के तीसरे दिन समूह नृत्य (लोक नृत्य) और कार्टून प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। शाम 4 बजे विद्या मंडप सभागार में समापन समारोह आयोजित होगा।

तेज केसरी

हनुमानगढ़ और जयपुर से एक साथ प्रकाशित

दैनिक हिन्दी

वर्ष :41 अंक :111

मंगलवार 1 मई 2024

हनुमानगढ़ टाउन (राजस्थान)

पृष्ठ: 8 मूल्य : 3.00/-

फोन: 01552-231003

मोबाईल: 098291-69311

097727-49200

E-mail: tejkesari@yahoo.co.in

sandeepeditor03@gmail.com

RNI NO. : 31080/77

और करप्शन के मामलों में मुकदमा चलाने की मंजूरी देने की पेंडिंग रिपोर्ट मांगी

र दो अधिकारी बर्खास्त, महिला धिकारी की पेंशन रोकने के आदेश

ादेश दिए गए हैं। सरकार से बिना अनुमति लिए लंबे समय से र हाजिर चल रहे दो अफसरों ो सरकारी नौकरी से बर्खास्त रने का फैसला किया है। ुख्यमंत्री ने इसके लिए विभाग ो एक्शन लेने के आदेश दिए ैं। मुख्यमंत्री ने जांच और पील के दो मामलों में आरोपी फसरों को बरी कर दिया। नके खिलाफ सबूत नहीं थे।

उन्होंने कार्मिक विभाग के स्तर पर अनुशासनात्मक कार्रवाई और अभियोजन स्वीकृति के मामलों को जल्दी निपटाने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने हर विभाग में अफसरों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही और करप्शन के मामलों में मुकदमा चलाने की मंजूरी देने की पेंडिंग रिपोर्ट मांगी है। विभाग को अफसरों के खिलाफ पेंडिंग मामलों की 30 जून 2024 तक की स्टेटस रिपोर्ट जुलाई के पहले सप्ताह तक भेजने को कहा है।

मुख्यमंत्री ने सरकारी विभागों के खिलाफ अदालतों में पेंडिंग चल रहे मुकदमों में प्रभावी तरीके से पैरवी करने के निर्देश दिए। उन्होंने अफसरों को पेंडिंग केस की लगातार मॉनिटरिंग करने और विभागों के साथ कोऑर्डिनेशन बनाने को कहा है।

एसकेआरएयू इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में स्टूडेंट्स ने दी बेहतरीन परफॉर्मेंस। समाचार पृष्ठ 3 पर

एसकेआरएयू इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में स्टूडेंट्स ने दी बेहतरीन परफॉर्मेंस

तेजकेसरी न्यूज/बीकानेर, 30अप्रैल।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 29 अप्रैल से 1 मई तक चल रहे इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल के दूसरे दिन हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्टूडेंट्स ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट , पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी।

डॉ वीर सिंह यादव ने बताया कि युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर की अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजलि राजपुरोहित और रानु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हल्का स्वर एकल गीत(इंडियन) में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज बीकानेर के रौनक खत्री, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल और तीसरे स्थान पर

आईएबीएम बीकानेर के विनोद कुमार रहे। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर , दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट्स और तीसरे स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के स्टूडेंट्स रहे। कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिकल विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स और दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट रहे।

सहायक सांस्कृतिक समन्वयक व लाइजन ऑफिसर डॉ वाई के सिंह ने बताया कि यूथ फेस्टिवल के तीसरे दिन समूह नृत्य (लोक नृत्य) और कार्टून प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। शाम 4 बजे विद्या मंडप सभागार में समापन समारोह आयोजित होगा। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी इसमें हिस्सा ले रहे हैं।3

हनुमानगढ़।सर्व ब्राह्मण महासभा हनुमानगढ़ के तत्वावधान में भगवान परशुराम जन्मोत्सव 10 मई को भव्य रूप में मनाया जायेगा। महासभा के जिलाध्यक्ष दुर्गा प्रसाद शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में कलेक्ट्रेट के समीप स्थित परशुराम चौक पर प्रातः 7.30 बजे पूजा अर्चना तथा दोपहर बाद 5 बजे जंक्शन बस स्टैंड के पास स्थित दुर्गा मंदिर धर्मशाला में प्रतिभा सम्मान व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।कार्यक्रम में हनुमानगढ़ जिले की समाज की प्रत्येक क्षेत्र की प्रतिभाएं सम्मिलित होगी। ऐसे छात्र जिन्होंने परीक्षा वर्ष 2023, 24 तथा रिजल्ट घोषित नहीं स्थिति में वर्ष 2022. 23 की कक्षा 8,10. 12 वीं, स्नातक, स्नातकोत्तर व व्यवसायिक फाइनल रिजल्ट में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले सम्मान के पात्र होंगे। सम्मान हेतु आवेदन दिनांक 05 मई 2024 तक हनुमानगढ़ जंक्शन क्षेत्र के लिए गौड़ ब्राह्मण धर्मशाला में सुरेश कुमार शर्मा को,रेलवे स्टेशन गेट के पास अशोक व्यास किरयाना मर्चेंट, तथा हनुमानगढ़ टाउन क्षेत्र के लिए लोहिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल कालेज फाटक के पास जमा कराये जा सकतें हैं। आवेदन फार्म में विवरण के साथ साथ फोटो भी लगाना होगा अन्य कोई भी जानकारी मोबाइल न 94145 08312. 8619426126 9116931001 से प्राप्त की जा सकती है। आवेदन का प्रारूप आवेदन जमा कराने वाले स्थान पर उपलब्ध होगा।

एसकेआरएयू इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में स्टूडेंट्स ने दी बेहतरीन परफॉर्मेंस

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 29 अप्रैल से 1 मई तक चल रहे इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल के दूसरे दिन हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट , पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी।

डॉ वीर सिंह यादव ने बताया कि युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर के अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजलि राजपुरोहित और रानु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हल्का स्वर एकल गीत (इंडियन) में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज बीकानेर के रौनक खत्री, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल और तीसरे स्थान पर आईएबीएम बीकानेर के विनोद कुमार रहे।

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर , दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट्स और तीसरे स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के स्टूडेंट्स रहे। कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिकल विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स और दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट रहे।

सहायक सांस्कृतिक समन्वयक व लाइजन ऑफिसर डॉ वाई के सिंह ने बताया कि यूथ फेस्टिवल के तीसरे दिन समूह नृत्य (लोक नृत्य) और कार्टून प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। शाम 4 बजे विद्या मंडप सभागार में समापन समारोह आयोजित होगा। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी इसमें हिस्सा ले रहे हैं।

पंजाब केसरी
WED,01 MAY 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 3

एस.के.आर.ए.यू. इंटर कॉलेज यूथ फैस्टिवल में स्टूडैंट्स ने किया बेहतरीन प्रदर्शन

बीकानेर, 30 अप्रैल (प्रेम) : स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 29 अप्रैल से 1 मई तक चल रहे इंटर कॉलेज यूथ फैस्टिवल के दूसरे दिन हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्टूडैंट्स ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट , पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता में स्टूडैंट्स ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी।

यूथ फैस्टिवल में परफॉर्मेंस देते स्टूडैंट्स। (प्रेम)

डॉ. यादव ने बताया कि युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर के अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजलि राजपुरोहित और रानु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हल्का स्वर एकल गीत(इंडियन) में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज बीकानेर के रौनक खत्री, कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल द्वितीय और आई.ए.बी.एम. बीकानेर के विनोद कुमार तृतीय रहे।

डॉ. दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर, दूसरे पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडैंट्स और तीसरे पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के स्टूडैंट्स रहे। कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिकल विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडैंट्स, दूसरे पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडैंट रहे।

सहायक सांस्कृतिक समन्वयक व लाइजन ऑफिसर डॉ. वाई के सिंह ने बताया कि फैस्टिवल के तीसरे दिन समूह नृत्य (लोक नृत्य) और कार्टून प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

यूथ फेस्टिवल में स्टूडेंट्स ने दी बेहतरीन परफॉर्मेंस

आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार किए घोषित

बीकानेर | स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 29 अप्रैल से 1 मई तक चल रहे इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल के दूसरे दिन हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट, पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी। डॉ. वीर सिंह यादव ने बताया कि युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर के अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजली राजपुरोहित और राधु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हल्का स्वर एकल गीत में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज के रैनक खत्री, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल और तीसरे स्थान पर आईएबीएम के विनोद कुमार रहे। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट्स और तीसरे स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स रहे। कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स और दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट रहे।

इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में नृत्य, गीत और संगीत से समां बांधा

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल के दूसरे दिन विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. वीर सिंह ने बताया कि विद्या मंडल सभागार में मंगलवार को युगल नृत्य, हल्का स्वर वाला एकल गीत, समूह गीत (इंडियन), स्किट, पोस्टर, कोलाज बनाना, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बेहतरीन परफॉर्मेंस दी। युगल नृत्य में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सूर्य प्रताप सिंह पंवार और तृषा पोद्दार ने प्रथम, कृषि कॉलेज बीकानेर के अंशिता जैन और कोमल ने द्वितीय और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अंजलि राजपुरोहित और रानु पंवार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हल्का स्वर एकल गीत(इंडियन) में प्रथम स्थान कृषि कॉलेज बीकानेर के रौनक खत्री, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज मंडावा के विष्णु सिंह देवल और तीसरे स्थान पर आईएबीएम बीकानेर के विनोद कुमार रहे। सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. दीपाली धवन ने बताया कि पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृषि कॉलेज श्रीगंगानगर, दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट्स और तीसरे स्थान पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के स्टूडेंट्स रहे। कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सामुदायिकल विज्ञान महाविद्यालय के स्टूडेंट्स और दूसरे स्थान पर कृषि कॉलेज बीकानेर के स्टूडेंट रहे।

02.05.2024

Date-01.05.2024

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

बीकानेर, 01 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ठ अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम.कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक श्री राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव , डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, श्री सीपी मीणा, श्री सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, श्री रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार शिक्षा के साथ साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं। साथ ही कहा कि हार के जीतना ही असली जीतना है। हार का स्वाद चखना भी जरूरी है। सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई।

एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक गण स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ साथ पिछले दिनों हुई खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स अन्य गतिविधियों के साथ शिक्षा में भी सर्वोत्तम कर विश्वविद्यालय और अपने माता पिता का नाम रोशन करें।

इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने स्वागत भाषण देते यूथ फेस्टिवल में हुए विभिन्न आयोजनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही आखिर में सभी का धन्यवाद भी ज्ञापित किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने सभी विजेताओं के नाम घोषित किए। मंच संचालन सहायक आचार्य डॉ मंजू राठौड़ व सहायक आचार्य डॉ केशव मेहरा ने किया। इससे पूर्व अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे दीपक प्रज्जवलित किया। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी , झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी ने हिस्सा लिया।

दैनिक भास्कर
बीकानेर 02-05-2024

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का रंगारंग समापन

बीकानेर| स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ठ अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. सीपी सचान और आरएसएम कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ. पीके यादव, डॉ. एसआर यादव, डॉ. आरएस राठौड़, डॉ. जेके तिवाड़ी, सीपी मीणा, सुनील कुमार शर्मा, आशा वर्मा, रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार शिक्षा के साथ-साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चांदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी ने हिस्सा लिया।

प्रशान्त ज्योति श्रीगंगानगर

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ठ अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम.कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव, डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, सीपी मीणा,सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार शिक्षा के साथ साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं। साथ ही कहा कि हार के जीतना ही असली जीतना है। हार का स्वाद चखना भी जरूरी है। सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई।

एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक गण स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ साथ पिछले दिनों हुई खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स अन्य गतिविधियों के साथ शिक्षा में भी सर्वोत्तम कर विश्वविद्यालय और अपने माता पिता का नाम रोशन करें।

इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने स्वागत भाषण देते यूथ फेस्टिवल में हुए विभिन्न आयोजनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही आखिर में सभी का धन्यवाद भी ज्ञापित किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने सभी विजेताओं के नाम घोषित किए। मंच संचालन सहायक आचार्य डॉ मंजू राठौड़ व सहायक आचार्य डॉ केशव मेहरा ने किया। इससे पूर्व अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे दीपक प्रज्जवलित किया। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी ने हिस्सा लिया।

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

तेज. रिपोर्टर | बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ट अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम.कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक श्री राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव, डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, श्री सीपी मीणा, श्री सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, श्री रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार शिक्षा के साथ साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं। साथ ही कहा कि हार के जीतना ही असली जीतना है। हार का स्वाद चखना भी जरूरी है। सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई। एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक गण स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ साथ पिछले दिनों हुई खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स अन्य गतिविधियों के साथ शिक्षा में भी सर्वोत्तम कर विश्वविद्यालय और अपने माता पिता का नाम रोशन करें। इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने स्वागत भाषण देते यूथ फेस्टिवल में हुए विभिन्न आयोजनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही आखिर में सभी का धन्यवाद भी ज्ञापित किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने सभी विजेताओं के नाम घोषित किए। मंच संचालन सहायक आचार्य डॉ मंजू राठौड़ व सहायक आचार्य डॉ केशव मेहरा ने किया। इससे पूर्व अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे दीपक प्रज्जवलित किया। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी ने हिस्सा लिया।

महिला यात्री के सूटकेस में से 15 लाख

इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ठ अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम. कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव, डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, सीपी मीणा, सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। मंच संचालन सहायक आचार्य डॉ मंजू राठौड़ व सहायक आचार्य डॉ केशव मेहरा ने किया।

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन हुआ। समारोह में अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके-119 उत्पादन को लेकर डॉ. पीके यादव, डॉ. एसआर यादव, डॉ. आरएस राठौड़, डॉ. जेके तिवाड़ी, सीपी मीणा, सुनील कुमार शर्मा, आशा वर्मा, रोहित राठौड़ को सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। विशिष्ठ अतिथि प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं। सह आचार्य डॉ. ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई। एसकेआरएयू कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। कार्यक्रम संयोजक डॉ. वीर सिंह, समन्वयक डॉ. दीपाली धवन, डॉ. मंजू राठौड़, डॉ. केशव मेहरा आदि शामिल हुए।

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ठ अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम.कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक श्री राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव, डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, श्री सीपी मीणा, श्री सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, श्री रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार शिक्षा के साथ साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं। साथ ही कहा कि हार के जीतना ही असली जीतना है। हार का स्वाद चखना भी जरूरी है। सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई। एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक गण स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ साथ पिछले दिनों हुई खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स अन्य गतिविधियों के साथ शिक्षा में भी सर्वोत्तम कर विश्वविद्यालय और अपने माता पिता का नाम रोशन करें।

एसकेआरएयू में इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का हुआ रंगारंग समापन

बीकानेर (लोकमत, संवाद)।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप सभागार में बुधवार को इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल का समापन समारोह आयोजित हुआ। 29 अप्रैल से 1 मई तक चले इस फेस्टिवल के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीश कुमार गर्ग, विशिष्ट अतिथि सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत डीटी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान और आर.एस.एम.कॉलेज धामपुर बिजनौर के सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मोर्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक श्री राजेंद्र कुमार खत्री समेत कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर समेत बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। समापन समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इस दौरान अतिथियों ने काचरी के बीज किस्म एएचके- 119 उत्पादन को लेकर डॉ पीके यादव, डॉ एसआर यादव, डॉ आरएस राठौड़, डॉ जेके तिवाड़ी, श्री सीपी मीणा, श्री सुनील कुमार शर्मा, श्रीमती आशा वर्मा, श्री रोहित राठौड़ को भी सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए राजुवास कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार शिक्षा के साथ साथ स्टूडेंट्स के लिए अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दे रहे हैं ये बहुत अच्छी बात है। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स जिस भी फील्ड में जाएं वहां जुनून के साथ कार्य करें। पूर्व अधिष्ठाता प्रो.सी.पी सचान ने कहा कि इस तरह के आयोजन यूथ के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं। साथ ही कहा कि हार के जीतना ही असली जीतना है। हार का स्वाद चखना भी जरूरी है। सह आचार्य डॉ ओम प्रकाश मौर्य ने कहा कि स्टूडेंट्स को शिक्षक गणों का पूरा सहयोग देखकर खुशी हुई।

एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षक गण स्टूडेंट्स की बहुत अच्छी ग्रूमिंग कर रहे हैं। साथ ही स्टूडेंट्स के लिए वाद्य यंत्रों के साथ साथ पिछले दिनों हुई खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को भी खेल सुविधा प्रदान करने की बात कही। साथ ही कहा कि स्टूडेंट्स अन्य गतिविधियों के साथ शिक्षा में भी सर्वोत्तम कर विश्वविद्यालय और अपने माता पिता का नाम रोशन करें।

इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ वीर सिंह ने स्वागत भाषण देते यूथ फेस्टिवल में हुए विभिन्न आयोजनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही आखिर में सभी का धन्यवाद भी ज्ञापित किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता व फेस्टिवल की सांस्कृतिक समन्वयक डॉ दीपाली धवन ने सभी विजेताओं के नाम घोषित किए। मंच संचालन सहायक आचार्य डॉ मंजू राठौड़ व सहायक आचार्य डॉ केशव मेहरा ने किया। इससे पूर्व अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे दीपक प्रज्जवलित किया। विदित है कि यूथ फेस्टिवल के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित 7 संगठक महाविद्यालय श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के चाँदगोठी, झुंझुनूं के मंडावा और बीकानेर कृषि महाविद्यालय के अलावा आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी ने हिस्सा लिया।

प्रेस नोट
(For Print media)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date-05.05.2024

एसकेआरएयू के एग्रोनेट(शेडनेट) हाउस में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के आए सकारात्मक परिणाम

अब आम किसान ऑफ़ सीजन में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत और कम समय में खीरे का ले सकेंगे अधिक उत्पादन

पश्चिमी राजस्थान में कम लागत से अधिक उत्पादन व लाभ के लिए एग्रोनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प- डॉ अरुण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू

बीकानेर, 04 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। उन्होने बताया कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है।लिहाजा आम किसान कम जगह में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत से अधिक उत्पादन और अधिक आय प्राप्त कर सकता है।

पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी श्री पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है।लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

प्रेस नोट
(For Electronic and Social media)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date-05.05.2024

Cucumber_pkg_bkn_05may24_

एंकर
अब आम किसान भी ऑफ सीजन में शेडनेट हाउस के जरिए बहुत कम लागत व कम समय में खीरे का ज़्यादा उत्पादन ले सकेंगे। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर के एग्रोनेट हाउस में ऑफ सीजन में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के शुरूआती परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। देखिए ये खास रिपोर्ट

वीओ-1
ये है बीकानेर का स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय। जिसमें लगे हुए एग्रोनेट हाउस में ऑफ सीजन में खीरा उत्पादन को लेकर शोध कार्य चल रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लिया। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है।कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। साथ ही कहा कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।
बाइट-
डॉ अरुण कुमार
कुलपति, एसकेआरएयू बीकानेर

वीओ-2
यूनिवर्सिटी के हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव बताते हैं कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून महीने में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की बूंद-बूंद सिंचाई के जरिए अच्छी फसल ली जा सकती है।
बाइट-
डॉ पी के यादव
विभागाध्यक्ष, उद्यान विभाग, एसकेआरएयू, बीकानेर

वीओ-3
पीएचईडी स्टूडेंट गाइड व सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार बताते हैं कि शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर अधिकतम उत्पादन पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसको लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है कि एक सामान्य किसान भी छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस लगाकर संरक्षित खेती के ज़रिए कितना लाभ कमा सकता है। इसको लेकर विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। एक महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।
बाइट-
डॉ सुशील कुमार
सहायक आचार्य, एसकेआरएयू, बीकानेर

फाइनल वीओ-

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में खीरे पर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणामों ने उन आम किसानों को बड़ा फ़ायदा हो सकता है जो ऑफ सीजन में कम लागत में खीरे का उत्पादन शेडनेट के जरिए करना चाहते हैं। पॉली हाउस के मुकाबले कम लागत और बहुत ही कम मेंटेनेंस के चलते आने वाले समय में शेडनेट हाउस के जरिए खीरा उत्पादन की ओर किसानों का रुझान बढ़ सकता है।

गर्मी में ढाल बना शेडनेट हाउस, खीरे की खेती में मिली सफलता

कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे शोध में सामने आए सकारात्मक परिणाम

किसानों को मिलेगा कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन का विकल्प

पत्रिका
पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. पश्चिमी राजस्थान में मई-जून में भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों के बीच देशी खीरे (बिना बीज वाला खीरा) की पैदावार करना संभव हो गया है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध में ऐसे सकारात्मक परिणाम मिले हैं। इसमें पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है।

एसकेआरयू के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने खीरा उत्पादन को दिखाते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। इस तरह खीरे की संरक्षित खेती करने से किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियमें न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। इसके शुरुआती परिणाम भी सकारात्मक आए हैं।

पॉलीहाउस के मुकाबले कम लागत

कुलपति ने बताया कि पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से एग्रोनेट हाउस बनकर तैयार हो जाता है। इसमें खीरे का उत्पादन कृषि विश्वविद्यालय में आकर किसान देख सकते है। पश्चिमी राजस्थानं में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती अच्छा विकल्प बना है।

ऑफ सीजन में मिलेगा देशी खीरा

हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ. पीके यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे की पैदावार पॉलीहाउस और शेडनेट में मिलती है। परन्तु मई-जून में बहुत ज्यादा तापमान होने पर पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में दिक्कतें आती हैं। जबकि एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। फल की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है। बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है। यहां के मौसम और मिट्टी की अनुकूलता है।

कृषि विश्वविद्यालय में बने शेडनेट हाउस में खीरे की खेती।

एक दिन के अंतराल पर 40 से 70 किलो उत्पादन

पीएचडी स्टूडेंट और सहायक आचार्य डॉ. सुशील कुमार ने बताया कि शोधार्थी पवन कुमार खीरे पर शोध कर रहे हैं। यह अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान के लिए छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती करना संभव है क्या। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन के अंतराल पर करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है। जो अगले तीन महीने तक जारी रहेगा।

किसान देखें और खेती करें

एसकेआरयू के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि शेडनेट हाउस को तैयार करने से लेकर खीरे के बीज बोने और पौधों से उत्पादन लेने की पूरी प्रक्रिया को किसान एसकेआरयू परिसर में आकर देख सकते हैं। अभी 15 गुणा 30 मीटर के छोटे ब्लॉक में खीरा का उत्पादन सफलतापूर्वक किया गया है। किसान भी छोटे स्तर पर इसका उत्पादन शुरू कर सकते हैं।

दैनिक भास्कर

बीकानेर ज़िला 06-05-2024

कृषि विश्वविद्यालय • पॉलीहाउस के मुकाबले कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का हुआ अच्छा उत्पादन

अब आम किसान ऑफ सीजन में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत और कम समय में खीरे का ले सकेंगे अधिक उत्पादन

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं। एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रीशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ. पीके यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई- जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है।

• पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

-डॉ.अरुण कुमार, कुलपति, कृषि विवि

शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम, दो दिन में 40-70 किलो उत्पादन

शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वेरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

» खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के आए सकारात्मक परिणाम

एग्रोनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प - डॉ. अरुण कुमार

इबादत न्यूज

बीकानेर, 5 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। उन्होने बताया कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है। लिहाजा आम किसान कम जगह में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत से अधिक उत्पादन और अधिक आय प्राप्त कर सकता है।

पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ. सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

कम लागत से अधिक उत्पादन व लाभ के लिए एग्रोनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प- डॉ अरुण

एसकेआरएयू के एग्रोनेट(शेडनेट) हाउस में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के आए सकारात्मक परिणाम

खबर एक्सप्रेस

बीकानेर, 05 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। उन्होने बताया कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है। लिहाजा आम किसान कम जगह में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत से अधिक उत्पादन और अधिक आय प्राप्त कर सकता है।

पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी श्री पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है।

लिहाजा कृषि विश्व विद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

एसकेआरएयू : खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के आए सकारात्मक परिणाम

@बीकाणा संवाद

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है।

पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है।

एसकेआरएयू के एग्रोनेट (शेडनेट) हाउस में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के आए सकारात्मक परिणाम

अब आम किसान ऑफ़ सीजन में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत और कम समय में खीरे का ले सकेंगे अधिक उत्पादन

फर्स्ट न्यूज़

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होंने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। उन्होंने बताया कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है। हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है। लिहाजा आम किसान कम जगह में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत से अधिक उत्पादन और अधिक आय प्राप्त कर सकता है। पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी श्री पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है।लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

खुशखबर : बगैर सीजन भी शेडनेट से किसान ले सकेगें खीरे की पैदावार

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)।अब आम किसान भी ऑफ सीजन में शेडनेट हाउस के जरिए बहुत कम लागत व कम समय में खीरे का ज्यादा उत्पादन ले सकेंगे। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर के एग्रोनेट हाउस में ऑफ सीजन में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के शुरूआती परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में लगे हुए एग्रोनेट हाउस में ऑफ सीजन में खीरा उत्पादन को लेकर शोध कार्य चल रहा है। जिसके शुरुआती परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लिया। उन्होने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है।कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। साथ ही कहा कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है। यूनिवर्सिटी के हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी के यादव बताते हैं कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की बूंद-बूंद सिंचाई के जरिए अच्छी फसल ली जा सकती है। डॉ पी के यादव विभागाध्यक्ष, उद्यान विभाग, एसकेआरएयू, बीकानेर, पीएचईडी स्टूडेंट गाइड व सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार बताते हैं कि शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर अधिकतम उत्पादन पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसको लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है कि एक सामान्य किसान भी छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस लगाकर संरक्षित खेती के ज़रिए कितना लाभ कमा सकता है। इसको लेकर विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाए गए हैं। एक महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा। डॉ सुशील कुमार सहायक आचार्य, एसकेआरएयू ने कहा कि शोध कार्य के सकारात्मक परिणामों ने उन आम किसानों को बड़ा फ़ायदा हो सकता है जो ऑफ सीजन में कम लागत में खीरे का उत्पादन शेडनेट के जरिए करना चाहते हैं। पॉली हाउस के मुकाबले कम लागत और बहुत ही कम मेंटेनेंस के चलते आने वाले समय में शेडनेट हाउस के जरिए खीरा उत्पादन की ओर किसानों का रुझान बढ़ सकता है।

जगद्गुरु शं

Farming in Agronet Houses

Bkn's SKRAU's research on cucumber production yielding positive results

Agri experts from SKRAU eplaining abouth the Agronet House's effect on farming of cucumber & others in Bikaner on Sunday.

First India Bureau
Bikaner

The ongoing research work on cucumber production in Agronet House (Shadenet House) of Swami Keshwanand Rajasthan Agricultural University has yielded positive results. Vice-Chancellor Dr Arun Kumar said that the production of cucumber started in Agronet House only after about a month of sowing the seeds. He said that research is being done on the benefits to farmers.

Agronet houses are built at a lower cost than polyhouses. PHED Student Guide and Assistant Professor Dr Sushil Kumar said that about 40-70 kg cucumbers are produced every day.

'HIGH YIELDS & MORE INCOME AT LESS COST THROUGH AGRONET'

Horticulture Department Head Dr PK Yadav said that in the off season, cucumbers are produced in polyhouses and shednets and the May and June temperature affects production. "Farmers can get high yields and more income at less cost through Agronet House in less space," he said.

कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित

कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़ा हुए किसान अपने रिश्तेदारों, मित्रों और अन्य लोगों को भी जोड़े ताकि उन्हें भी कृषि की नई तकनीकों का फायदा मिले : डॉ जे.पी. मिश्रा, निदेशक, अटारी

जमीन की क्वालिटी चेककर किसानों को बताएंगे कौनसी फसल रहेगी उपयुक्त : डॉ अरूण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू, बीकानेर

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर को सौंपा

बीकानेर (लोकमत, संवाद)। कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पूरे देश में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद संग्रहालय सभागार में प्रसार शिक्षा निदेशालय की ओर से स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जेपी मिश्रा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र समेत सभी डीन, डायरेक्टर, छह जिलों के केवीके से आए हुए कृषि वैज्ञानिक व किसान शामिल हुए।

इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से संवाद व उनकी ज्यादातर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जेपी मिश्रा ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में प्रधानमंत्री सबसे ज्यादा जिसका उल्लेख करते हैं वह कृषि विज्ञान केन्द्र ही हैं।

लिहाजा कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़े हुए किसान अपने रिश्तेदारो और मित्रों को भी ज्यादा से ज्यादा जोड़ें। ताकि कृषि की नई तकनीकों का अन्य किसानों को भी लाभ मिले। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि जल्द ही मोबाइल वैन के जरिए किसानों को उनके खेत पर ही मिट्टी की क्वालिटी चेककर बताया जाएगा कि उनके खेत में फल, फूल, सब्जी, दलहन, तिहलन में से कौनसी फसल की उपज अच्छी होगी। उन्होंने कहा कि किसानों ने केवीके के वैज्ञानिकों से मिले सपोर्ट की जो जानकारी साझा की उससे हम सभी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी ने कहा कि अब किसानों को ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर करने की आवश्यता है। साथ ही कहा कि बीज का योगदान खेती में सबसे ज्यादा होता है। किसानों को बीज की अच्छी क्वालिटी मिले । ये प्राथमिकता में हो।

अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों द्वारा बताई ज्यादातर समस्याओं का मौके पर समाधान किया।कार्यक्रम की शुरूआत में प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के योगदान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उसके बाद छह जिलों से आए विभिन्न किसानों ने बताया कि केवीके द्वारा बताई गई नई तकनीकों के अपनाने से उनकी आमदनी कई गुणा बढ़ सकी। कार्यक्रम के आखिर में उपनिदेशक प्रसार डॉ राकेश कुमार ने वर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। विदित है कि देश में कुल 731 कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) हैं। देश में पहला केवीके पांडिचेरी में 21 मार्च 1974 को खोला गया था। वहीं देश का दूसरा केवीके और राजस्थान का पहला केवीके फतेहपुर में खोला गया था।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद संग्रहालय सभागार में प्रसार शिक्षा निदेशालय की ओर से स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जिसके मुख्य अतिथि अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जेपी मिश्रा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र समेत सभी डीन, डायरेक्टर, छह जिलों के केवीके से आए हुए कृषि वैज्ञानिक व किसान शामिल हुए। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से संवाद व उनकी ज्यादातर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा। कार्यक्रम के अंत में उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। विदित है कि देश में कुल 731 कृषि विज्ञान केन्द (केवीके) हैं। देश में पहला केवीके पांडिचेरी में 21 मार्च 1974 को खोला गया था। वहीं देश का दूसरा केवीके और राजस्थान का पहला केवीके फतेहपुर में खोला गया था।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित

बीकानेर, 6 मई। कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पूरे देश में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद संग्रहालय सभागार में प्रसार शिक्षा निदेशालय की ओर से स्वर्ण जयंताी मशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जेपी मिश्रा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र समेत सभी डीन, डायरेक्टर, छह जिलों के केवीके से आए हुए कृषि वैज्ञानिक व किसान शामिल हुए। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से संवाद व उनकी ज्यादातर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जेपी मिश्रा ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में प्रधानमंत्री सबसे ज्यादा जिसका उल्लेख करते हैं वह कृषि विज्ञान केन्द्र ही हैं। लिहाजा कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़े हुए किसान अपने रिश्तेदारो और मित्रों को भी ज्यादा से ज्यादा जोड़ें। ताकि कृषि की नई तकनीकों का अन्य किसानों को भी लाभ मिले। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि जल्द ही मोबाइल वैन के जरिए किसानों को उनके खेत पर ही मिट्टी की क्वालिटी चेककर बताया जाएगा कि उनके खेत में फल, फूल, सब्जी, दलहन, तिहलन में से कौनसी फसल की उपज अच्छी होगी। उन्होने कहा कि किसानों ने केवीके के वैज्ञानिकों से मिले सपोर्ट की जो जानकारी साझा की उससे हम सभी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी ने कहा कि अब किसानों को ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर करने की आवश्यता है। साथ ही कहा कि बीज का योगदान खेती में सबसे ज्यादा होता है। किसानों को बीज की अच्छी क्वालिटी मिले। ये प्राथमिकता में हो। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों द्वारा बताई ज्यादातर समस्याओं का मौके पर समाधान किया। कार्यक्रम की शुरूआत में प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के योगदान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उसके बाद छह जिलों से आए विभिन्न किसानों ने बताया कि केवीके द्वारा बताई गई नई तकनीकों के अपनाने से उनकी आमदनी कई गुणा बढ़ सकी। कार्यक्रम के आखिर में उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। विदित है कि देश में कुल 731 कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) हैं। देश में पहला केवीके पांडिचेरी में 21 मार्च 1974 को खोला गया था। वहीं देश का दूसरा केवीके और राजस्थान का पहला केवीके फतेहपुर में खोला गया था।

लोकसभा आम चुनाव-2024 : मतगणना को लेकर प्रभारी व अतिरिक्त प्रभारी लगाए

खेत पर ही होगा क्वालिटी चेक, बताएंगे कौन सी फसल रहेगी फायदेमंद

कृषि वैज्ञानिकों ने किया किसानों से संवाद

बीकानेर @ पत्रिका. कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पूरे देश में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद संग्रहालय सभागार में प्रसार शिक्षा निदेशालय की ओर से स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ. जेपी मिश्रा थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से संवाद व उनकी ज्यादातर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा।

इस दौरान डॉ. जेपी मिश्रा ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में प्रधानमंत्री सबसे ज्यादा जिसका उल्लेख करते हैं वह कृषि विज्ञान केन्द्र ही है। लिहाजा कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़े किसान अपने रिश्तेदारो और मित्रों को भी ज्यादा से ज्यादा जोड़ें। ताकि कृषि की नई तकनीकों का अन्य किसानों को भी लाभ मिले।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि जल्द ही मोबाइल वैन के जरिए किसानों को उनके खेत पर ही मिट्टी की क्वालिटी चेक कर बताया जाएगा कि उनके खेत मे फल, फूल, सब्जी, दलहन, तिलहन में से कौनसी फसल की उपज अच्छी होगी। कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने कहा कि अब किसानों को ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर करने की आवश्यकता है। साथ ही कहा कि बीज का योगदान खेती में सबसे ज्यादा होता है।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date-08.05.2024

भीषण गर्मी को देखते हुए कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ समस्त महाविद्यालयों के शैक्षणिक समय में किया बदलाव

आगामी आदेश तक प्रात 8 से दोपहर 2 बजे तक रहेगा शैक्षणिक समय

बीकानेर, 08 मई। भीषण गर्मी को देखते हुए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ समस्त महाविद्यालयों के शैक्षणिक समय में बदलाव किया गया है। कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी ने बुधवार को इस बाबत आदेश जारी किया। आदेश में लिखा गया है कि स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ आने वाले समस्त महाविद्यालयों का शैक्षणिक समय प्रात: 8 से दोपहर 2 बजे तक रहेगा। कार्यालय समय प्रात 10 बजे से शाम 5 बजे तक यथावत रहेगा। विदित है कि स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ सात संगठक महाविद्यालय आईएबीएम, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, कृषि महाविद्यालय बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चांदगोठी (चूरू) और मंडावा (झुंझुनूं) आते हैं। जिनके शैक्षणिक समय में बदलाव किया गया है।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date-08.05.2024

सिरोही नस्ल की बकरियों में फड़किया रोग (एंटरोटॉक्सिमिया) से बचाव हेतु किया वैक्सीनेशन

बीकानेर, 08 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में बुधवार को सिरोही नस्ल की 40 बकरियों में फड़किया रोग (एंटरोटॉक्सिमिया) से बचाव को लेकर वैक्सीनेशन किया गया। कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ एन.एस.दहिया ने बताया कि कुलपति डॉ अरूण कुमार के निर्देशन में कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर के समन्वित कृषि प्रणाली प्रोजेक्ट के तहत सिरोही नस्ल की 40 बकरियों की यूनिट में बुधवार को फड़किया रोग (एंटरोटॉक्सिमिया) से बचाव हेतु वैक्सीनेशन किया गया। साथ ही कुछ बीमार बकरियों का इलाज भी किया गया। पशुपालन विभाग की ओर से उपलब्ध करवाई गई वैक्सीन को राजुवास से आए पशु चिकित्सकों की टीम ने वैक्सीनेशन किया।

राजस्थान मौसम अपडेट: 8 मई

राज्य में आगामी 48 घंटों के दौरान अधिकतम तापमान में 1-2 डिग्री से. बढ़ोतरी होने की संभावना है। आज 8 मई को जोधपुर, बीकानेर संभाग में कहीं-कहीं अधिकतम तापमान 45-46 डिग्री सेल्सियस तथा जयपुर, भरतपुर, कोटा संभाग में अधिकतम तापमान 44 से 45 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज होने की प्रबल संभावना है। 9 मई को जोधपुर, बीकानेर संभाग मैं कहीं-कहीं तीव्र हीटवेव (Severe Heat wave) की संभावना है। इस दौरान जयपुर, भरतपुर व कोटा संभाग में भी हीटवेव चलने की संभावना है। 10 मई को बीकानेर, जयपुर, भरतपुर संभाग में हीटवेव जारी रहने की संभावना है। 10-11 मई से एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से राज्य के कुछ भागों में दोपहर बाद मेघगर्जन के साथ आंधी व हल्की बारिश की संभावना है।आंधी बारिश की गतिविधियां 11 व 13 मई को भी कुछ भागों में जारी रहने व कहीं-कहीं तेज आंधी 40 से 50 Kmph चलने व तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट होने की संभावना है। आंधी बारिश के प्रभाव से 11 मई से राजस्थान में हीट वेव से राहत मिलने के प्रबल आसार हैं।

मौसम विज्ञान केंद्र
जयपुर

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-012.05.2024

अब बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर समेत अन्य लवणीय जल (खारे पानी) वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

कृषि अनुसंधान केन्द्र में लवणीय जल (खारे पानी) से सौंफ की खेती पर तीन वर्षीय शोध के आए सकारात्मक परिणाम

सौंफ की किस्म आर एफ 290 में लवणीय जल से की गई बूंद बूंद सिंचाई से 9 क्विंटल प्रति है. का हुआ उत्पादन

बीकानेर, 12 मई। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना "लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग" अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह ने अनुंसधान के आधार पर बताया कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ का 9 क्विंटल प्रति है. उत्पादन लिया जा सकता है।

विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है।जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

प्रेस नोट
(For Electronic & Social media)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date-12.05.2024

Fennel_pkg_12_may_2024_bkn_

एंकर
अब बीकानेर और इसके आसपास के लवणीय पानी वाले जिले नागौर, चूरू, बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। देखिए ये खास रिपोर्ट

वीओ-1
बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। सौंफ की किस्म आर एफ 290 में लवणीय जल से की गई बूंद बूंद सिंचाई से 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन प्राप्त हुआ है। कुलपति डॉ अरुण कुमार बताते हैं कि इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।
बाइट-1
डॉ अरुण कुमार
कुलपति, एसकेआरएयू, बीकानेर

वीओ-2
प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।
बाइट-2
डॉ रामेश्वर लाल मीणा
प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीएसएसआरआई, करनाल

वीओ-3
कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव बताते हैं कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं।ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह बताते हैं कि विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आरएफ 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उत्पादन लिया जा सकता है।

बाइट-3
डॉ एसआर यादव
क्षेत्रीय निदेशक, कृषि अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
बाइट-4
डॉ भूपेन्द्र सिंह
प्रोजेक्ट इंचार्ज,एआईसीआरपी

फाइनल वीओ-
गौरतलब है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है।जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

दैनिक भास्कर
बीकानेर 13-05-2024

• कृषि अनुसंधान केन्द्र के खारे पानी वाले जिलों में 3 वर्ष तक चले शोध के आए सकारात्मक परिणाम

अब बीकानेर में भी बढ़ सकता है सौंफ का रकबा, प्रति हेक्टेयर 9 क्विंटल उत्पादन

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

गुजरात और राजस्थान के प्रमुख उत्पादन सौंफ को अब बीकानेर समेत आसपास के जिलों में लग सकते हैं पंख। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में पिछले तीन वर्षों से लवणीय जल में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के सकारात्मक परिणाम आए हैं। किसान अगर प्लानिंग के साथ इसकी खेती करें तो नौ क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त कर सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो पूर्वी राजस्थान के साथ पश्चिमी राजस्थान के खेतों में भी महक उठेगी सौंफ की सुगंध। सबसे खास बात यह कि इसकी बुआई रवि और खरीफ दोनों में की जा सकती है।

कृषि विवि के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना' लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' के अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर

अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से न केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हेक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों- बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर और जिन जिलों में ट्यूबवेल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

राजस्थान और गुजरात में होता है देश का 96 प्रतिशत सौंफ का उत्पादन

देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य हैं। जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

नकदी फसलों में शामिल है सौंफ

सौंफ एक ऐसी फसल है जिसके दाम भी किसानों को अच्छे मिलते हैं। मुनाफा अच्छा होता है। यही वजह है कि इसे नकदी फसलों में शामिल किया गया है। राजस्थान की बात करें तो अभी सौंफ की खेती की भरतपुर के अनेकों ग्रामीण इलाकों में की जाती है। नकदी फसल होने के चलते इसकी खेती से किसान अन्य फसलों की तुलना में अधिक मुनाफा पाते हैं। अगर इसे पश्चिमी राजस्थान के किसान भी अपनाते हैं तो भरतपुर क्षेत्र के साथ इस क्षेत्र में भी सौंफ की खेती से किसान बढ़िया कमाई कर सकेंगे। इसके लिए किसान कृषि विवि में प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकते हैं। इसका प्रयोग भी व्यापक स्तर पर होता है। मोटी सौंफ को व्यंजनों को बनाने में व्यापक रूप से किया जाता है तो खाने के बाद मुंह के सुगंधित रखने के लिए भी इसे खाया जाता है।

खारे पानी से सौंफ उत्पादन का हब बनेगा बीकानेर, प्रति हेक्टेयर 9 क्विंटल पैदावारी

बीकानेर : एक खेत में लगी सौंफ की फसल।

बीकानेर, 12 मई (प्रेम पाल) : बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया, जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं।

इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 खारा पानी सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हेटेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा, लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है, वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

पंजाब केसरी
MON,13 MAY 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 4

अब बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर समेत अन्य खारे पानी वाले जिले बनेंगे सौंफ उत्पादन के हब

कृषि अनुसंधान केन्द्र में लवणीय जल (खारे पानी) से सौंफ की खेती पर 3 वर्षीय शोध के आए सकारात्मक परिणाम

बीकानेर, 12 मई (प्रेम) : बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बनेंगे।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत 3 वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के सकारात्मक परिणाम आए हैं।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना "लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग" अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया, जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

एक खेत में उगाई गई सौंफ की फसल। (प्रेम)

प्रोजैक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजैक्ट का विजिट कर बताया कि 3 वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आर.एफ. 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है, वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एस.आर. यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं, ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है।

प्रोजैक्ट इंचार्ज डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने अनुंसधान के आधार पर बताया कि विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद-बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आर.एफ. 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन लिया जा सकता है।

विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य हैं,जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हैक्टयर) में होती है।

इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है, लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

कृषि अनुसंधान केन्द्र में 3 साल के शोध के आए सकारात्मक परिणाम

बीकानेर-चूरू सहित खारेपानी वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

सौंफ की किस्म आर एफ 290 में लवणीय जल से की गई बूंद बूंद सिंचाई से 9 क्विंटल प्रति है. का हुआ उत्पादन

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षो के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह ने अनुसधान के आधार पर बताया कि विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आरएफ 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन लिया जा सकता है।

विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है।जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

बीकानेर सहित अन्य लवणीय जल (खारे पानी) वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

सौंफ की खेती पर तीन वर्षीय शोध के आए सकारात्मक परिणाम

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला

उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह ने अनुसंधान के आधार पर बताया कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ का 9 क्विंटल प्रति हे. उत्पादन लिया जा सकता है। विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है, जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है । लेकिन, खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

आपकी खबर आप हमें हमारी ई मेल या वाट्सएप्प पर भेजें, हम प्रमुखता से आपकी खबर को प्रकाशित करने का पूरा प्रयास करेंगे।

बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर समेत अन्य खारे पानी वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

कृषि अनुसंधान केन्द्र में लवणीय जल (खारे पानी) से सौंफ की खेती पर तीन वर्षीय शोध के आए सकारात्मक नतीजे

सौंफ की किस्म आरएफ -290 में लवणीय जल से की गई बूंद-बूंद सिंचाई से 9 क्विन्टल प्रति हैक्टेयर का हुआ उत्पादन

हिंदुस्तान से रूबरू

बीकानेर (सुरेश जैन)। बीकानेर और इसके आसपास के नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के सकारात्मक नतीजे आए हैं। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' के अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति से लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

सौंफ की किस्म आरएफ-290 कर रही बेहतरीन प्रदर्शन

प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर एवं केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ-290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विन्टल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. भूपेन्द्रसिंह ने अनुंसधान के आधार पर बताया कि सौंफ की किस्म आरएफ-290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ का 9 क्विन्टल प्रति हैक्टेयर उत्पादन लिया जा सकता है।

राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले में होती है

विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है। जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं।
राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हैक्टेयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालोर, जैसलमेर, भरतपुर, सवाई माधोपुर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है, लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक नतीजों ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीदें जगा दी है।

अब बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर समेत अन्य लवणीय जल (खारे पानी) वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

कृषि अनुसंधान केन्द्र में लवणीय जल (खारे पानी) से सौंफ की खेती पर तीन वर्षीय शोध के आए सकारात्मक परिणाम

सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 12 मई। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह ने अनुसंधान के आधार पर बताया कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ का 9 क्विंटल प्रति है. उत्पादन लिया जा सकता है। विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है। जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामों ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

CMYK

खारा पानी-मीठा रिजल्ट : बूंद-बूंद सिंचाई से लहलहाई सौंफ की खेती

बीकानेर, नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर के सौंफ हब बनने की जगी उम्मीद

कृषि अनुसंधान केन्द्र में खारे पानी से खेती पर शोध में मिली सफलता

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर सौंफ की पैदावार देने वाली किस्म का चयन

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में खारे पानी से लहलहाती सौंफ की फसल।

बीकानेर @ पत्रिका. भूमिगत खारे पानी (लवणीय जल) में भी बीकानेर और आसपास के नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर जिले में सौंफ की खेती की राह खुल गई है। किसान इन जिलों में बंजर पड़ी भूमि पर खारे पानी से बूंद-बूंद सिंचाई कर खेती कर सकेंगे। तीन साल तक कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में चले अनुसंधान में सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। अनुसंधान में सौंफ की किस्म आरएफ-290 से प्रति हैक्टेयर 9 क्विंटल उत्पादन मिला है। इसने भविष्य में इन जिलों के सौंफ उत्पादन हब बनने की उम्मीद भी जगा दी है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कृषि अनुसंधान केन्द्र में तीन साल चली रिसर्च के परिणाम वैज्ञानिकों ने जारी किए हैं। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' के तहत ड्रिप सिंचाई पद्धति से लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। इसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इससे प्रदेश के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होने के साथ ही भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

यह बोले अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिक

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एसआर यादव ने कहा कि किसानों का मसाला फसलों की तरफ आकर्षण बढ़ रहा है। ऐसे में लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर अनुसंधान में मिली सफलता मददगार साबित हो सकती है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को उपयोग में लेकर उत्पादन किया जा सकता है।

ट्यूबवेल से खेती कारगर

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामेश्वर लाल मीणा ने बताया कि तीन साल के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 खारा पानी की सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन दिया है। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले राजस्थान के जिलों बीकानेर, नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर आदि के साथ ट्यूबवेल से खेती वाले जिलों में सौंफ की खेती का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

राजस्थान-गुजरात में 96 फीसदी उत्पादन

देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य हैं। देश में सौंफ उत्पादन में 96 फीसदी योगदान दे रहे हैं। प्रदेश में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले में करीब 10 हजार हैक्टेयर में होती है। सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर, भरतपुर, सवाई माधोपुर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है। चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर जिले में सिंचाई पानी नहीं होने और भूमिगत जल खारा होने से लोग खेती नहीं कर पाते।

खारा पानी-मीठा रिजल्ट : बूंद-बूंद सिंचाई से लहलहाई सौंफ की खेती

बीकानेर, नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर के सौंफ हब बनने की जगी उम्मीद

कृषि अनुसंधान केन्द्र में खारे पानी से खेती पर शोध में मिली सफलता

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर सौंफ की पैदावार देने वाली किस्म का चयन

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में खारे पानी से लहलहाती सौंफ की फसल।

बीकानेर @ पत्रिका. भूमिगत खारे पानी (लवणीय जल) में भी बीकानेर और आसपास के नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर जिले में सौंफ की खेती की राह खुल गई है। किसान इन जिलों में बंजर पड़ी भूमि पर खारे पानी से बूंद-बूंद सिंचाई कर खेती कर सकेंगे। तीन साल तक कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में चले अनुसंधान में सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। अनुसंधान में सौंफ की किस्म आरएफ-290 से प्रति हैक्टेयर 9 क्विंटल उत्पादन मिला है। इसने भविष्य में इन जिलों के सौंफ उत्पादन हब बनने की उम्मीद भी जगा दी है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कृषि अनुसंधान केन्द्र में तीन साल चली रिसर्च के परिणाम वैज्ञानिकों ने जारी किए हैं। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' के तहत ड्रिप सिंचाई पद्धति से लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। इसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इससे प्रदेश के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होने के साथ ही भविष्य में सौंफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

यह बोले अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिक

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एसआर यादव ने कहा कि किसानों का मसाला फसलों की तरफ आकर्षण बढ़ रहा है। ऐसे में लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर अनुसंधान में मिली सफलता मददगार साबित हो सकती है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 में विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को उपयोग में लेकर उत्पादन किया जा सकता है।

ट्यूबवेल से खेती कारगर

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामेश्वर लाल मीणा ने बताया कि तीन साल के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 खारा पानी की सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन दिया है। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले राजस्थान के जिलों बीकानेर, नागौर, चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर आदि के साथ ट्यूबवेल से खेती वाले जिलों में सौंफ की खेती का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

राजस्थान-गुजरात में 96 फीसदी उत्पादन

देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य हैं। देश में सौंफ उत्पादन में 96 फीसदी योगदान दे रहे हैं। प्रदेश में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले में करीब 10 हजार हैक्टेयर में होती है। सिरोही, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर, भरतपुर, सवाई माधोपुर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है। चूरू, झुंझुनूं, बाड़मेर जिले में सिंचाई पानी नहीं होने और भूमिगत जल खारा होने से लोग खेती नहीं कर पाते।

बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर समेत खारे पानी वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। बीकानेर जिले समेत और आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग' अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 खारा पानी सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

किसान हो रही मसाला फसलों की ओर आकर्षित

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान फिलहाल मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह ने अनुंसधान के आधार पर बताया कि विद्युत चालकता 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आरएफ 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन लिया जा सकता है।

सौंप उत्पादन में सिरमौर है राजस्थान

जानकारी में रहे कि कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है। जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले में करीब 10 हजार हेक्टयर में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामो ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

देश में राजस्थान व गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य, जिनका सौंफ उत्पादन में **96** फीसदी का योगदान

बीकानेर व जोधपुर सम्भाग बन सकता है, सौंफ उत्पादन का हब

रामकिशन शर्मा

श्रीगंगानगर। भारतीय किसान संघ के प्रांतीय महामंत्री सत्यनारायण गोदारा ने बताया कि गत वर्ष 10 बीघा में बीटी नरमा की खेती की, लेकिन इसमे गुलाबी सुंडी का भयंकर प्रकोप हो गया। इस कारण मात्र 18 क्विंटल उत्पादन ही हुआ। इससे खर्चा भी पूर्ण नहीं हो सका। नेताओं के आश्वासन भी डाक के तीन पात रहे। इसके बाद मैंने सोशल मीडिया पर मसाला फसल सौंफ के बारे में काफी कुछ देखा, सुना तो नवाचार करने का मन बना लिया। क्योंकि मेरा हमेशा कुछ अलग हटकर रिस्क लेकर करने की आदत रही है। इससे पूर्व किनु, बेर,जोजोबा, ब्लैक गेहूं पर ऐसा कर चुका हूं। इस बार रबि फसल में साथ दो बीघा में सौंप की खेती की 4.50 कुंतल प्रतिबीघा का उत्पादन हुआ

है। डेढ़ किलोग्राम प्रति बीघा बीज, मशीन से नवंबर प्रथम सप्ताह में बुवाई की। चार सिंचाई, 20 किलोग्राम प्रतिबीघा यूरिया खाद, हाथ से कटाई करवाने के बाद सामान्य गेहूं निकालने की मशीन से फसल निकलवाई। इससे 4.50 कुंतल प्रतिबीघा उत्पादन हुआ।

आवारा पशु बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचाते : इस फसल को आवारा पशु बिल्कुल भी नहीं नुकसान पहुंचाते हैं। रायसिंहनगर तहसील में इस बार लगभग 25 हेक्टेयर में सौंफ फसल की बुवाई हुई। किसानों को फसल विक्रय की चिंता को देखते हुए सौंफ फसल उत्पादन राजस्थान के नाम से व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है जो काफी मददगार साबित हो सकता है फसल उत्पादन में आगामी वर्ष क्षेत्र लगभग दुगने से भी अधिक होना निश्चित है कृषि विभाग को इस बाबत किसानों को उचित मार्गदर्शन देने चाहिए और एफपीओ के माध्यम से फसल खरीद पर कार्यक्रम करना चाहिए इस बार अधिकांश सौंप की किस्म दीपक सी की 63 व मंगलम सी की बोली ना को बुवाई हुई सौंप की खेती में लाइन से लाइन की दूरी 12, 18 अथवा 24 इंच एवं जहां रेतली भूमि है, वहां छिड़काव विधि से भी बुवाई की जा सकती है। अधिक जल भराव वाली भूमि में फंगस की समस्या हो सकती है। जिला अनूपगढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ में सौंफ फसल सरसों का एक विकल्प बन सकती है। सरसों में इसमें दो या तीन सिंचाई अधिक चाहिए। इसके अलावा अन्य उत्पादक खर्च कम है। प्रचलित किस्म में आरएफ 125 आरएफ 143 आरएफ 101 के अलावा प्राइवेट किस्म की भी इसमें बाजार में उपलब्ध है।

वैज्ञानिकों को लवणीय जल में भी सकारात्मक परिणाम

अब बीकानेर और इसके आसपास के लवणीय पानी वाले जिले नागौर, चूरू, बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं।

बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्षों से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। सौंफ की किस्म आर एफ 290 में लवणीय जल से की गई बूंद बूंद सिंचाई से 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन प्राप्त हुआ है। कुलपति डॉ अरुण कुमार बताते हैं कि इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

- डॉ अरुण कुमार, कुलपति,
एसकेआरएयू, बीकानेर

गौरतलब है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है, जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है,लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामों ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

- डॉ. भूपेन्द्र सिंह
प्रोजेक्ट इंचार्ज,एआईसीआरपी

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्षों के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

- डॉ रामेश्वर लाल मीणा
प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीएसएसआरआई, करनाल

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एसआर यादव बताते हैं कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्षों के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ भूपेन्द्र सिंह बताते हैं कि विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आरएफ 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उत्पादन लिया जा सकता है।

- डॉ. एसआर यादव
क्षेत्रीय निदेशक, कृषि अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-14.05.2024

एसकेआरएयू में ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के कुलपति ने दिए निर्देश

बीकानेर, 14 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा।

इससे पूर्व सिमका प्रभारी प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो । कुलपति डॉ अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए । साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी।बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरों के सुचारू रूप से चलना सुनिश्चित करने के लिए, वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए।

निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए सभी डीन, डायरेक्टर्स को इकाइयों में मॉडेम स्थापित किए जाने के निर्देश दिए गए। बैठक में सशुल्क आवासीय इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करवाने की मॉडेलिटी निर्धारित करने के निर्देश दिए गए। आखिर में कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि शोध पत्र अनुसंधान निदेशक की अनुमति से ही प्रकाशित किए जाने चाहिए, जो इन प्रकाशनों के रिकॉर्ड रखने के लिए भी जिम्मेदार होंगे। बैठक में कुलपति समेत सभी डीन,डायरेक्टर्स उपस्थित रहे।

ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश

बीकानेर, 14 मई (प्रेम पाल): स्वामी केशवानंद राजस्थान ऋषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं, लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा। इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए, साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

बीकानेर : बैठक में भाग लेते डीन डायरेक्टर्स।

बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी।

स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय में

ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के कुलपति ने दिए निर्देश

खबर एक्सप्रेस

बीकानेर, 14 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा।

इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो । कुलपति डॉ अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए ।साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी।बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरों के सुचारू रूप से चलना सुनिश्चित करने के लिए, वार्षिक रखारखाव अनुबंध (एएमसी) की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए।

निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए सभी डीन, डायरेक्टर्स को इकाइयों में मॉडेम स्थापित किए जाने के निर्देश दिए गए। बैठक में सशुल्क आवासीय इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करवाने की मॉडेलिटी निर्धारित करने के निर्देश दिए गए। आखिर में कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि शोध पत्र अनुसंधान निदेशक की अनुमति से ही प्रकाशित किए जाने चाहिए, जो इन प्रकाशनों के रिकॉर्ड रखाने के लिए भी जिम्मेदार होंगे। बैठक में कुलपति समेत सभी डीन,डायरेक्टर्स उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर बीकानेर 15-05-2024

एसकेआरएयू में ई-फाइलिंग लागू करने के निर्देश

बीकानेर | स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा। इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो। कुलपति ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए। सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों की जानकारी 30 मई तक विवि की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर में लागू होगी ई-फाइलिंग व्यवस्थाः डॉ. अरुण कुमार

न्यूज सर्विस/नवज्योति, बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर में जल्द ही ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू होगी। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा। इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए। साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

सभी की बनाई जाए ई-मेल आईडी : बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी। बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरों के सुचारू रूप से चलना सुनिश्चित करने के लिए, वार्षिक रखरखाव अनुबंध की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए सभी डीन, डायरेक्टर्स को इकाइयों में मॉडम स्थापित किए जाने के निर्देश दिए गए।

एसकेआरएयू में ई-फाइलिंग व्यवस्था के दिए निर्देश

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा। इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए। साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी।बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरों के सुचारू रूप से चलना सुनिश्चित करने के लिए, वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए सभी डीन, डायरेक्टर्स को इकाइयों में मॉडेम स्थापित किए जाने के निर्देश दिए गए। बैठक में सशुल्क आवासीय इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करवाने की मॉडेलिटी निर्धारित करने के निर्देश दिए गए। आखिर में कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि शोध पत्र अनुसंधान निदेशक की अनुमति से ही प्रकाशित किए जाने चाहिए, जो इन प्रकाशनों के रिकॉर्ड रखने के लिए भी जिम्मेदार होंगे। बैठक में कुलपति समेत सभी डीन, डायरेक्टर्स उपस्थित रहे।

ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि मे कुलपति डॉ. अरुण कुमार अध्यक्षता मे बैठक हुई। इस दौरान कुलपति ने डीन-डायरेक्टर्स को विवि मे ई-फाइलिंग व्यवस्था शुरू करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा। इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी सुजीत कुमार यादव ने विवि वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की स्थिति के बारे मे बताया। कुलपति ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए। साथ ही सभी को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में जानकारी 30 मई तक वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए। बैठक मे कहा कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने मे सुविधा होगी ।

ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के दिए निर्देश

● शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाने का निर्णय

बीकानेर। बैठक में मौजूद विश्वविद्यालय कुलपति व डीन डायरेक्टर्स।

बीकानेर (सच कहूँ न्यूज)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने सभी डीन डायरेक्टर्स की बैठक लेते हुए विश्वविद्यालय में ई-फाइलिंग व्यवस्था प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के स्तर से ई-फाइलिंग व्यवस्था लागू करने के निर्देश हैं लिहाजा विश्वविद्यालय में इसे लागू किया जाए। प्रारंभिक प्रशिक्षण पीएमयू को दिया जाएगा।

इससे पूर्व सीआईएमसीए प्रभारी एवं प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट और ई-फाइलिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में इस बात पर भी सहमति हुई कि विश्वविद्यालय के लिए अलग-अलग इकाइयों के लिए अलग-अलग वेबसाइट के बजाय एक ही व्यापक वेबसाइट हो।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने इस एकीकृत वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन करने के निर्देश सिमका प्रभारी को दिए। साथ ही सभी डीन, डायरेक्टर्स और सभी यूनिट प्रभारियों को अपनी-अपनी इकाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी 30 मई तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए।

बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए संस्थागत ईमेल आईडी बनाई जाए। इससे विश्वविद्यालय के नाम के साथ अनुसंधान साझा करने तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में सुविधा होगी। बैठक में स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरों के सुचारू रूप से चलना सुनिश्चित करने के लिए, वार्षिक रख-रखाव अनुबंध (एएमसी) की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए सभी डीन, डायरेक्टर्स को इकाइयों में मॉडम स्थापित किए जाने के निर्देश दिए गए। बैठक में सशुल्क आवासीय इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करवाने की मॉडलिटी निर्धारित करने के निर्देश दिए गए।

आखिर में कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि शोध पत्र अनुसंधान निदेशक की अनुमति से ही प्रकाशित किए जाने चाहिए, जो इन प्रकाशनों के रिकॉर्ड रखने के लिए भी जिम्मेदार होंगे। बैठक में डीन, डायरेक्टर्स मौजूद रहे।

एसकेआरएयू :अब किसानों के नाम पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण में पंजीकृत करवाएगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए 'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण' (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी-पीपीवीएफआरए) में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को 'राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो' (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज- एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया।

प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही।

बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञानिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिचर्स कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण'

एसकेआरएयू किसानों के नाम करवायेगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां पंजीकृत

खबर एक्सप्रेस

बीकानेर, 16 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशीध् कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए 'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण' यप्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी. पीपीवीएफआरएद्ध में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञनिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को 'राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो' नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज. एनबीपीजीआरद्ध में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौधा प्रजाति जिसमें विटामिनए मिनरल्स, प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही। बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञनिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिचर्स कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

फसलों की देशी प्रजातियों को संरक्षित करने को लेकर एसकेआरएयू की कवायद

देशी प्रजातियां को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावतए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी. के. यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादवए श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन. के. शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर

Date-16.05.2024

एसकेआरएयू अब किसानों के नाम "पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण" में पंजीकृत करवाएगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां

फसलों की देशी प्रजातियों को संरक्षित करने को लेकर एसकेआरएयू की कवायद

देशी प्रजातियां को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

बीकानेर, 16 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/ कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए "पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण" (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी- पीपीवीएफआरए) में किसान भाईय़ों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को "राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो" (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज- एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन , मिनरल्स,प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही। बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञानिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिचर्स कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत , प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र , कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा ,कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश , आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू अब किसानों के नाम 'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण' में पंजीकृत करवाएगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां

फसलों की देशी प्रजातियों को संरक्षित करने को लेकर एसकेआरएयू की कवायद

देशी प्रजातियां को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

बीकानेर (लोकमत, संवाद)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए 'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण' (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी- पीपीवीएफआरए) में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को 'राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो' (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज-एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स,प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही।

बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञानिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिसर्च कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा,कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू अब किसानों के नाम पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण में पंजीकृत करवाएगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां

फसलों की देशी प्रजातियों को संरक्षित करने को लेकर एसकेआरएयू की कवायद

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/ कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए %%पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण%% (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी- पीपीवीएफआरए) में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को %%राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो%% (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज-एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स,प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो।

कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/ कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए 'पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण'में किसानों का रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को 'राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो' में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो। मिटिंग में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू अब किसानों के नाम ''पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण'' में पंजीकृत करवाएगा विभिन्न फसलों की देशी प्रजातियां

देशी प्रजातियां को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

बीकानेर, 16 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/ कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए "पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण" (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी-पीपीवीएफआरए) में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को "राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो" (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज- एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स,प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही। बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञानिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिचर्स कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा,कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू अब किसानों के नाम पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण में पंजीकृत करवाएगा

›› देशी प्रजातियां को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की रिव्यू बैठक आयोजित की गई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी/ कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं उन सभी को संरक्षित करते हुए पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी-पीपीवीएफआरए) में किसान भाईयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों को राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज-एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए

जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने साथ ही कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। ताकि भविष्य में जैसा मौसम परिवर्तित हो रहा है तापमान बढ़ रहा है या वर्षा में परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स,प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएगी जो वर्तमान समय के अनुरूप हो और किसानों के लिए लाभदायक हो।

इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही। बैठक के बाद कुलपति ने लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव व अन्य कृषि वैज्ञानिकों के साथ लेबोरेट्री का निरीक्षण कर प्रयोगशाला में हो रहे रिचर्स कार्यों की सराहना की। साथ ही कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर में बंद पड़ी सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ पी.के.यादव, मानव संसाधन निदेशालय के निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, कृषि महाविद्यालय श्रीगंगानगर के डीन डॉ विजय प्रकाश, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पीसी गुप्ता, लेबोरेट्री इंचार्ज प्रोफेसर सुजीत कुमार यादव, श्रीगंगानगर के कॉटन ब्रीडर डॉ एन.के.शर्मा समेत अन्य स्टॉफ, पीएचईडी व एमएससी के स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

देशी प्रजातियां को संरक्षित करने का प्रयास

कृषि विवि में की जाएगी जीन बैंक की स्थापना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार की अध्यक्षता में गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की समीक्षा बैठक हुई। महाविद्यालय परिसर स्थित सूक्ष्म पादप संवर्धन प्रयोगशाला के सेमिनार हॉल में आयोजित बैठक में कुलपति ने कहा कि हमारे किसान भाईयों के पास जो विभिन्न फसलों की देशी, कृषक प्रजातियां उपलब्ध हैं। उन सभी को संरक्षित करते हुए पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार अभिकरण (प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फॉर्मर्स राइट अथोरिटी-

गुरुवार को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान मौजूद लोग बात करते हैं।

पीपीवीएफआरए) में किसान भाइयों के नाम ही रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से विकसित प्रजातियों को राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज- एनबीपीजीआर) में संरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। साथ ही विभाग में संचालित किए गए शोध कार्यक्रमों को संकलित कर उच्च तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने को भी कहा।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि इन देशी प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय में जीन बैंक की भी स्थापना की जाएगी। इसी प्रकार गुणवत्तायुक्त पौध प्रजाति जिसमें विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन आदि पदार्थ पाए जाते हैं। इन सभी को आवश्यकतानुसार गुणों को ट्रांसफर करके ऐसी प्रजातियां विकसित की जाएंगी, जो वर्तमान समय के अनुरूप हों और किसानों के लिए लाभदायक हो। इससे पूर्व आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पीसी गुप्ता ने पीपीटी के माध्यम से विभाग की गतिविधियों का विस्तृत प्रजेंटेशन दिया। प्रसार निदेशक डॉ. सुभाष चंद्र ने प्रदेश के किसानों की समस्याओं को रखते हुए उचित प्रजाति विकास की बात कही।

किसानों को हो रही आय, मिट्टी की भी बढ़ रही गुणवत्ता

धोरों में पल रही पंगेशियस मछलियां

खेती किसानी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पोकरण (आंचलिक). सरहदी जिला रेत के धोरों के बीच बसा हुआ हैं। इस रेगिस्तानी जिले में मछली पालन करना किसी चुनौती से कम नहीं हैं। ऐसी ही चुनौती स्वीकार कर धोरों के बीच मछली पालन किया जा रहा हैं। क्षेत्र के बांधेवा गांव में प्रगतिशील किसान खेती के साथ ही मछली पालन कर रहे हैं। उनकी ओर से पंगेशियस मछली का उत्पादन किया जा रहा हैं। सरहदी जिले में भीषण गर्मी सबसे ज्यादा पड़ती हैं। इसी के चलते किसान पंगास मछली का पालन आसानी से कर सकते हैं। सर्दी की बजाय गर्मी के मौसम में पंगास मछली की वृद्धि तेजी से होती है। पंगास का संचयन गर्मी के शुरुआत में करना अच्छा होता है, ताकि गर्मी में संचयन व पालन कर सर्दी के मौसम में बाजार में बिक्री की जा सके। यह मछली कम समय में तैयार होती हैं और मुनाफा ज्यादा देती हैं। इस कारण किसान इस मछली को ज्यादा पसंद करते हैं।

दिन में दो-तीन बार दें आहार, मिट्टी की बढ़ती है गुणवत्ता

पोकरण. मछली पालन का जायजा लेते विशेषज्ञ। पत्रिका

पंगेशियस मछली की प्रारंभिक अवस्था में दो-तीन बार आहार दिया जाता है और बाद में धीरे-धीरे वजन बढ़ने पर आहार की मात्रा कम कर दी जाती है। काई व घोंघे इसका प्रमुख आहार है। प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता अच्छी हो तो पूरक आहार में खर्च कम होता है। आहार में अधिक प्रोटीनयुक्त पदार्थ का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार एकल खेती में 15-20 ग्राम की एक लाख अंगुलिकाओं को 400 वर्गमीटर संचयन करने से 7-8 माह में 60-65 टन तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में तापमान 15 डिग्री से कम होने पर मछली तनाव में आ जाती है और खाना कम कर देती है। जिससे वजन कम हो जाता है। ऐसे में अक्टूबर माह तक मछली की निकासी कर लेनी चाहिए। तालाब के पानी को खेत में देने से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है और फसल का उत्पादन भी बढ़ जाता है।

यह है विशेषताएं

- पंगास मछली मीठे पानी में पलने वाली दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी प्रजाति है। यह छह से आठ महिनों में एक से डेढ़ किलो तक हो जाती है।
- वायुश्वासी होने से कम घुलित ऑक्सीजन को सहन करने की क्षमता रखती है।
- भारत में आंध्रप्रदेश पंगास का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।
- अन्य मछलियों की तुलना में इसमें पतले कांटे कम होते है।
- इस मछली की मांग सबसे ज्यादा है।
- यह मछली रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक रखती है।

पोषक तत्वों से भरपूर है पंगास

कृषि विज्ञान केन्द्र पोकरण के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.रामनिवास ने बताया कि पंगेशियस मछली में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती हैं। कम समय में वजन अधिक बढ़ता है। जिससे किसान इसे अपना रहा है। खाने में पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ यह स्वादिष्ट भी है।

इस प्रकार कर सकते है पालन

पंगास मछली पालन के लिए संचयन तालाब का आकार 400 वर्गमीटर तक अच्छा माना जाता है। इसमें एक लाख मछलियों का पालन किया जा सकता है। तालाब में पानी की गहराई दो से तीन मीटर तक होनी चाहिए। अधिक गहराई वाले तालाब उपयुक्त नहीं है। क्योंकि पंगास वायुश्वासी होने से बार-बार सतह पर आकर ऑक्सीजन लेती है। ज्यादा गहराई होने से उनकी वृद्धि दर कम हो जाती है। पंगास की अच्छी वृद्धि और उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए पानी का पीएच 6.5-7.5, लवणता 2 पीपीटी से कम और क्षारीयता 40-200 पीपीएम होनी चाहिए।

लागत कम, लाभ ज्यादा

मछली पालन में तालाब के अलावा किसान को पानी व आहार पर खर्च करना पड़ता है। इसमें लागत व लाभ का अनुपात 1:3 रहता है। पंगास की डिमांड भी अधिक रहती है। इसलिए पंगास पालन से अच्छी कमाई हो जाती है। प्रगतिशील किसान खेलाणा निवासी बीरबलखां व बांधेवा निवासी हाजी हसनखां ने बताया कि वे पंगास मछली का पालन कर रहे है। मछली का वजन एक से डेढ़ किलो है। जिसकी बिक्री यहीं फार्म पर ही हो जाती है। कम जगह व लागत में अच्छा मुनाफा हो रहा है। साथ ही लोगों को भी सस्ती व ताजा मछली मिल रही है। गर्मी के मौसम में खेती करना मुश्किल हो जाता है। इस कारण मछली पालन व्यवसाय शुरू किया और इससे लाभ मिल रहा है।

आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे किसान

क्षेत्र का वातावरण मछली अनुकूल होने के कारण किसान इसमें रुचि दिखा रहा है। खेती के साथ मछली पालन करने से आर्थिक रूप से भी किसान मजबूत हो रहे है। साथ ही जिले में युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होने लगे है।

- डॉ. दशरथप्रसाद, अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, पोकरण

दैनिक भास्कर
बीकानेर 20-05-2024

दैनिक भास्कर

बीकानेर फ्रंट पेज

dainikbhaskar.com | दैनिक भास्कर, सोमवार 20 मई, 2024

भास्कर एक्सक्लूसिव • कृषि विवि की जमीन पर 15 साल से जहरीला पानी, एनजीटी ने कहा समाधान करे पीसीबी

पानी का जहर...कृषि विवि की 80 बीघा जमीन हुई खराब
पेड़-पौधे जले, हॉस्टल खाली, इंटीग्रेटेड फार्मिंग लगभग बंद

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की करीब 80 बीघा जमीन पर फैले बीछवाल और करणी इंडस्ट्रियल एरिया के करीब तीन लाख लीटर प्रदूषित पानी की समस्या का समाधान करने के लिए एनजीटी ने राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल को पाबंद किया है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने अपने फैसले में कहा है कि यदि दोनों औद्योगिक क्षेत्रों में उद्योग प्रदूषण पैदा कर रहे हैं और बिना उपचार के औद्योगिक और व्यापार अपशिष्ट कर रहे है तो प्रदूषण नियंत्रण मंडल कार्रवाई करे। आदेश में कहा है कि जल अधिनियम 1974, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 और वायु अधिनियम 1981 के प्रावधान और कानून के अनुसार औद्योगिक इकाइयों को बंद करना, मुआवजा लगाना और आपराधिक कार्यवाही शुरू करना शामिल है। प्रदूषित पानी की समस्या को लेकर विवि ने पिछले साल नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेंट्रल जोनल बैंच, भोपाल के समक्ष रीको, पॉल्यूशन बोर्ड व अन्य के विरुद्ध परिवाद प्रस्तुत किया था। विवि ने उद्योगों को बंद करने, रीको के विरुद्ध कार्रवाई और पर्यावरणीय मुआवजा लगाने की मांग की थी। बीछवाल और करणी के उद्योगपतियों में इस आदेश से हड़कंप मचा हुआ है। उनका कहना है कि रीको के पास एंड वाटर डिस्पोजल की कोई योजना नहीं है, जिसकी वजह से पानी विवि में जमा हो रहा है। अब पानी सीपेज होकर सड़क के नीचे से विवि की बिल्डिंग्स तक पहुंचने लगा है। पानी की दुर्गंध इतनी अधिक है कि दो हॉस्टल, आवासीय कॉलोनी के आधे से अधिक क्वार्टर खाली हो चुके हैं। नर्सरी में पौधे नष्ट हो गए। इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम बंद होने के कगार पर है।

कृषि विवि की जमीन पर फैला प्रदूषित पानी, जिससे पेड़ जल गए।

औद्योगिक इकाइयों का सर्वे शुरू

एनजीटी के आदेश के बाद पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड ने बीछवाल और करणी उद्योगिक क्षेत्र में स्थित औद्योगिक इकाइयों का सर्वे शुरू कर दिया है। बताया जा रहा है कि बीछवाल में 30-35 फूड और वूलन इकाइयां है, जिनसे पानी ज्यादा निकलता है। हालांकि सभी ने अपने स्तर पर ईटीपी लगा रखे है। जिनसे पानी शोधित होकर बाहर नाले में चला जाता है। इसके अलावा रीको एरिया में पांच सौ से ज्यादा आवासीय मकान और बड़ी संख्या में दुकानें भी है। इसी प्रकार करणी इंडस्ट्रियल एरिया में पांच सौ से ज्यादा औद्योगिक इकाइयां है। इन सभी से निकलने वाले पानी का डिस्पोजल नहीं होने के कारण यह करणी विस्तार और कृषि विवि के परिसर में जाकर इकट्ठा होता है। बारिश में हालात और भी खराब हो जाते हैं।

प्रदूषित पानी का डिस्पोजल करने के लिए हुआ था एमओयू

विवि परिसर में जमा हो रहे प्रदूषित पानी का डिस्पोजल करने के लिए दिसंबर 2020 में करणी वाटर यूरो फाउंडेशन, बीछवाल ईको फ्रेंडली फाउंडेशन और कृषि विवि के बीच एमओयू हुआ था। जिसके तहत करणी विस्तार में सीईटीपी लगाया जाना था। उससे निकलने वाले शोधित पानी का उपयोग विवि बागवानी में करता। लेकिन सीईटीपी अब तक नहीं लगाया जा सका। इसकी वजह से करणी विस्तार में 50 बीघा और कृषि विवि की 80 बीघा भूमि पर प्रदूषित पानी फैला हुआ है।

विवि परिसर के एक बड़े हिस्से में इंडस्ट्रीज का प्रदूषित पानी सालों से खड़ा है। इसकी वजह से हमारी जमीन खराब हो गई। बिल्डिंग्स को नुकसान पहुंच रहा है। इस समस्या को लेकर एनजीटी में परिवाद दिया था। एनजीटी ने पॉल्यूशन बोर्ड को कार्रवाई करने के लिए पाबंद किया है। हमने भी पत्र लिखे हैं।

-डॉ. अरुण कुमार, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय

उद्योगपति बोले-रीको की गलती से जमा हुआ पानी

बीछवाल उद्योग संघ के अध्यक्ष प्रशांत कंसल का कहना है कि पानी के प्रदूषित होने का असली कारण रीको है। रीको ने बीछवाल और करणी औद्योगिक क्षेत्र बसाकर करोड़ों रुपए कमाए, लेकिन इनसे निकलने वाले वेस्ट वाटर के ट्रीटमेंट का कोई सिस्टम नहीं बनाया, जबकि पर्यावरण स्वीकृति लेने के लिए रीको ने लिखित में वेस्ट वाटर की जिम्मेदारी ली थी। बीछवाल ईको फ्रेंडली फाउंडेशन के अध्यक्ष उमाशंकर माथुर का कहना है कि रीको ने एंड वाटर डिस्पोजल की कोई स्कीम नहीं बनाई। बीछवाल में 30-35 फूड और वूलन इंडस्ट्रियां है, जिनका पानी ज्यादा निकलता है। उन्होंने अपने स्तर पर ईटीपी लगा रखे हैं। बड़ा आबादी क्षेत्र भी है। घर और दुकानों का भी पानी आता है। इसका डिस्पोजल करने की जिम्मेदारी रीको की है।

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर

Date-20.05.2024

विश्व मधुमक्खी दिवस पर एसकेआरएयू में कार्यक्रम का आयोजन

खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी महत्वपूर्ण कड़ी - डॉ अरूण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू

बीकानेर, 20 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय में सोमवार को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर ''खाद्य सुरक्षा एवं जैव विविधता के लिए मधुमक्खियां जरूरी'' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होने कहा कि मधुमक्खी एक ऐसा सामाजिक कीट है जो ना सिर्फ शहद उत्पन्न करता है बल्कि इसके द्वारा रॉयल जैली, पराग कण, प्रोपोलिस, मोम आदि भी प्राप्त होता है। विदित है कि मधुमक्खी दिवस सम्पूर्ण विश्व में 20 मई को मधुमक्खी पालन के प्रथम अन्वेषक ऐन्टोन जानसा की जयंती पर वर्ष 2017 से प्रति वर्ष मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव ने मधुमक्खियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दुनियां में मधुमक्खी ना हो तो मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाएगी। इसी क्रम में प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने मधुमक्खी पालन को उद्यमिता के रूप में अपनाने को लेकर कहा कि इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहिए। इसमें जमीन की भी आवश्यता नहीं होती। वरिष्ठ कीट वैज्ञानिक एवं छात्र कल्याण निदेशक डॉ वीर सिंह ने मघुमक्खी से प्राप्त होने वाले विभिन्न उत्पादों व उनकी उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच.एल.देशवाल ने बताया कि विश्व मधुमक्खी दिवस मनाने का उद्देश्य युवाओं व आमजन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में जागरूक करना है और कृषि के सुस्थिर उत्पादन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में बताना है। उन्होने बताया कि देश में मधुमक्खियों से शहद का कुल उत्पादन 1 लाख 33 हजार मैट्रिक टन होता है। देश में शहद उत्पादन में राजस्थान का स्थान पांचवां है। साथ ही बताया कि मधुमक्खियों द्वारा परागण होने से विभिन्न फसलों मे उत्पादन में वृद्धि होती है। कार्यक्रम में डॉ विमला डुकवाल, डॉ दाताराम, डॉ निर्मल सिंह दहिया, डॉ राजेश वर्मा समेत विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों के अधिष्ठाता, निदेशक, महाविद्यालय के प्राध्यापक गण, कार्मिक व स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन व धन्यवाद ज्ञापन डॉ वी.एस.आचार्य ने किया।

खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी महत्वपूर्ण कड़ी - डॉ अरूण कुमार

21.05.2024

खबर एक्सप्रेस

बीकानेर, 20 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय में सोमवार को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर 'खाद्य सुरक्षा एवं जैव विविधता के लिए मधुमक्खियां जरूरी' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होने कहा कि मधुमक्खी एक ऐसा सामाजिक कीट है जो ना सिर्फ शहद उत्पन्न करता है बल्कि इसके द्वारा रॉयल जैली, पराग कण, प्रोपोलिस, मोम आदि भी प्राप्त होता है। विदित है कि मधुमक्खी दिवस सम्पूर्ण विश्व में 20 मई को मधुमक्खी पालन के प्रथम अन्वेषक ऐन्टोन जानसा की जयंती पर वर्ष 2017 से प्रति वर्ष मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव ने मधुमक्खियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दुनियां में मधुमक्खी ना हो तो मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाएगी। इसी क्रम में प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने मधुमक्खी पालन को उद्यमिता के रूप में अपनाने को लेकर कहा कि इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहिए। इसमें जमीन की भी आवश्यता नहीं होती। वरिष्ठ कीट वैज्ञनिक एवं छात्र कल्याण निदेशक डॉ वीर सिंह ने मधुमक्खी से प्राप्त होने वाले विभिन्न उत्पादों व उनकी उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।
कीट विज्ञन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच.एल. देशवाल ने बताया कि विश्व मधुमक्खी दिवस मनाने का उद्देश्य युवाओं व आमजन मधुमक्खियों के योगदान के बारे में जागरू करना है और कृषि के सुस्थिर उत्पादन मधुमक्खियों के योगदान के बारे में बताना है उन्होंने बताया कि देश में मधुमक्खियों से शहद व कुल उत्पादन 1 लाख 33 हजार मैट्रिक टन होता है देश में शहद उत्पादन में राजस्थान का स्था पांचवां है। साथ ही बताया कि मधुमक्खियों द्वा परागण होने से विभिन्न फसलों मे उत्पादन में वृ होती है।

कार्यक्रम में डॉ विमला डुकवाल, ड दाताराम, डॉ निर्मल सिंह दहिया, डॉ राजेश व समेत विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों अधिष्ठाता, निदेशक, महाविद्यालय के प्राध्याप गण, कार्मिक व स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। कार्यक्रम मंच संचालन व धन्यवाद ज्ञापन डॉ वी.एस आचार्य ने किया।

विश्व मधुमक्खी दिवस पर एसकेआरएयू में कार्यक्रम का आयोजन

मधुमक्खी न हो तो खतरे में पड़ जाएगी इंसान की नस्ल

बीकानेर (नसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय में सोमवार को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर 'खाद्य सुरक्षा एवं जैव विविधता के लिए मधुमक्खियां जरूरी' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. अरूण कुमार ने कहा कि खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी एक ऐसा सामाजिक कीट है जो ना सिर्फ शहद उत्पन्न करता है बल्कि इसके द्वारा रॉयल जैली, पराग कण, प्रोपोलिस, मोम आदि भी प्राप्त होता है। विदित है कि मधुमक्खी दिवस सम्पूर्ण विश्व में 20 मई को मधुमक्खी पालन के प्रथम अन्वेषक ऐन्टोन जानसा की जयंती पर वर्ष 2017 से प्रति वर्ष मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव ने मधुमक्खियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दुनियां में मधुमक्खी ना हो तो मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाएगी। इसी क्रम में प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने मधुमक्खी पालन को उद्यमिता के रूप में अपनाने को लेकर कहा कि इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहिए। इसमें जमीन की भी आवश्यता नहीं होती। कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच. एल. देशवाल ने बताया कि देश में मधुमक्खियों से शहद का कुल उत्पादन 1 लाख 33 हजार मैट्रिक टन होता है। देश में शहद उत्पादन में राजस्थान का स्थान पांचवां है। मंच संचालन व धन्यवाद ज्ञापन डॉ वी.एस.आचार्य ने किया।

क्ष कार्यालय फड़ बाजार बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : उमेश सक्सेना। फोन- 2521982, 2200582, 2521539 प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार सुर

पंजाब केसरी
TUE,21 MAY 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 3

विश्व मधुमक्खी दिवस पर एस.के.आर.ए.यू. में कार्यक्रम आयोजित

खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी महत्वपूर्ण कड़ी : डॉ. अरुण

विश्व मधुमक्खी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अधिकारी। (प्रेम)

बीकानेर, 20 मई (प्रेम) : स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय में सोमवार को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर 'खाद्य सुरक्षा एवं जैव विविधता के लिए मधुमक्खियां जरूरी' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

उन्होंने कहा कि मधुमक्खी एक ऐसा सामाजिक कीट है, जो ना सिर्फ शहद उत्पन्न करता है, बल्कि इसके द्वारा रॉयल जैली, पराग कण, प्रोपोलिस, मोम आदि भी प्राप्त होता है। विदित है कि मधुमक्खी दिवस सम्पूर्ण विश्व में 20 मई को मधुमक्खी पालन के प्रथम अन्वेषक ऐन्टोन जानसा की जयंती पर वर्ष 2017 से प्रति वर्ष मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव ने मधुमक्खियों के जीवन पर प्रकाश डालते बताया कि दुनियां में मधुमक्खी ना हो तो मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाएगी।

प्रसार निदेशक डॉ. सुभाष चंद्र ने मधुमक्खी पालन को स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहिए। इसमें जमीन की भी आवश्यता नहीं होती। वरिष्ठ कीट वैज्ञानिक एवं छात्र कल्याण निदेशक डॉ. वीर सिंह ने मधुमक्खी से प्राप्त होने वाले विभिन्न उत्पादों व उनकी उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच.एल. देशवाल ने बताया कि विश्व मधुमक्खी दिवस मनाने का उद्देश्य युवाओं व आमजन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में जागरूक करना है और कृषि के सुस्थिर उत्पादन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में बताना है। उन्होंने बताया कि देश में शहद उत्पादन में राजस्थान का स्थान 5वां है।

कार्यक्रम में डॉ. विमला डुकवाल, डॉ. दाताराम, डॉ. निर्मल सिंह दहिया, डॉ. राजेश वर्मा समेत विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों के अधिष्ठाता, निदेशक, महाविद्यालय के प्राध्यापक गण, कार्मिक व स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

विश्व मधुमक्खी दिवस पर एसकेआरएयू में कार्यक्रम का आयोजन

खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी महत्वपूर्ण कड़ी : डॉ अरूण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू

बीकानेर (लोकमत, संवाद)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय में सोमवार को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर खाद्य सुरक्षा एवं जैव विविधता के लिए मधुमक्खियां जरूरी विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होने कहा कि मधुमक्खी एक ऐसा सामाजिक कीट है जो ना सिर्फ शहद उत्पन्न करता है बल्कि इसके द्वारा रॉयल जैली, पराग कण, प्रोपोलिस, मोम आदि भी प्राप्त होता है। विदित है कि मधुमक्खी दिवस सम्पूर्ण विश्व में 20 मई को मधुमक्खी पालन के प्रथम अन्वेषक ऐन्टोन जानसा की जयंती पर वर्ष 2017 से प्रति वर्ष मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव ने मधुमक्खियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दुनियां में मधुमक्खी ना हो तो मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाएगी। इसी क्रम में प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने मधुमक्खी पालन को उद्यमिता के रूप में अपनाने को लेकर कहा कि इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहिए। इसमें जमीन की भी आवश्यता नहीं होती। वरिष्ठ कीट वैज्ञानिक एवं छात्र कल्याण निदेशक डॉ वीर सिंह ने मघुमक्खी से प्राप्त होने वाले विभिन्न उत्पादों व उनकी उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच.एल.देशवाल ने बताया कि विश्व मधुमक्खी दिवस मनाने का उद्देश्य युवाओं व आमजन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में जागरूक करना है और कृषि के सुस्थिर उत्पादन में मधुमक्खियों के योगदान के बारे में बताना है। उन्होने बताया कि देश में मधुमक्खियों से शहद का कुल उत्पादन 1 लाख 33 हजार मैट्रिक टन होता है। देश में शहद उत्पादन में राजस्थान का स्थान पांचवां है। साथ ही बताया कि मधुमक्खियों द्वारा परागण होने से विभिन्न फसलों मे उत्पादन में वृद्धि होती है। कार्यक्रम में डॉ विमला डुकवाल, डॉ दाताराम, डॉ निर्मल सिंह दहिया, डॉ राजेश वर्मा समेत विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों के अधिष्ठाता, निदेशक, महाविद्यालय के प्राध्यापक गण, कार्मिक व स्टूडेंट्स उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन व धन्यवाद ज्ञापन डॉ वी.एस.आचार्य ने किया।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-21.05.2024

एसकेआरएयू वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" पर यूके से मिला पेटेंट

किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

बीकानेर, 21 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है।कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ.वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन ''स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है। साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

[3:58 pm, 21/5/2024] Suresh Ji PRO SKRAU: प्रेस नोट (for electronic & social media)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-21.05.2024

machine_patent_pkg_bkn_21_may_2024_

एंकर

फसल अवशेष पराली इत्यादि जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण से अब राहत की उम्मीद जगी है।बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है।लिहाजा अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रह सकती है। देखिए ये खास रिपोर्ट

वीओ-1
बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ.वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ.अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। साथ ही बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी।
बाइट- 1
डॉ अरुण कुमार
कुलपति, एसकेआरएयू, बीकानेर

वीओ-2
कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।
बाइट- 2
डॉ अरुण कुमार
कुलपति, एसकेआरएयू, बीकानेर

वीओ-3
कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव बताते हैं कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन ''स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है। सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह बताते हैं कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।
बाइट- 3
डॉ वाई.के.सिंह
सह आचार्य, एसकेआरएयू, बीकानेर

फाइनल वीओ-
सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर बताती हैं कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

साइन ऑफ/ पीटीसी

पंजाब केसरी
WED,22 MAY 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 3
22.05.2024

फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यू.के. से मिला पेटेंट

बीकानेर, 21 मई (प्रेम): स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं, वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता, लेकिन "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके से मिला पेटेंट। (प्रेम)

इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत "स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर" का डिजाइन तैयार किया गया है, जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है, साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं, लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया, साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जातेहैं, उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है, जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है, साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है।

किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है, जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल मह[illegible] बायोमास का नुकसान होता [illegible] यण वृद्धि में भी महत्[illegible] हैं। फसल अवशेष द[illegible] रता भी कम हो रही है [illegible] स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके से मिला पेटेंट

किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

इबादत न्यूज

बीकानेर, 21 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है।कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है। साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

नरेश कुमार मारू :- 7240278306 बीकानेर मंगलवार 21 मई 2024

किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन , पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ.वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर

पाता। लेकिन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।

विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था। कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है।

एसकेआरएयू वैज्ञनिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके से मिला पेटेंट

किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

खबर एक्सप्रेस

बीकानेर, 21 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञनिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि वैज्ञनिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें। विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन 'श्स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

एसकेआरएयू वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके से मिला पेटेंट

>> किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है।

साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है।

जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को मिला पेटेंट, पर्यावरण प्रदूषण से मिलेगी राहत

बीकानेर, 21 मई (तेजकेसरी न्यूज)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन ÷स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर÷ पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ.वाई. के. सिंह, शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन ÷स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर÷ मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत ÷स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर÷ का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन %%स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर÷ आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है। साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

रेल सेवाएं बहाल, किसान आंदोलन खत्म : बाड़मेर-ऋषिकेश, बाड़मेर-जम्मूतवी अब गंतव्य तक

जोधपुर, 21 मई (तेजकेसरी न्यूज)।

उत्तर रेलवे के अंबाला मंडल के शंभू स्टेशन पर चल रहे किसान आंदोलन के खत्म होने के साथ ही इससे प्रभावित हुई रेल सेवाएं बहाल कर दी गई है।उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम पंकज

एक ट्रेन परिवर्तित मार्ग से चलाई जा रही थी।

उन्होंने बताया कि किसान आंदोलन खत्म होने से अब ट्रेन 14888/ 14887,बाड़मेर-ऋषिकेश-बाड़मेर एक्सप्रेस बठिंडा में आंशिक रद्द होने की बजाय

पराली दहन समस्या का मिला हल : फसल अवशेष प्रबंधन मशीन पर ब्रिटेन से मिला पेटेंट

कृषि विवि का कमाल : किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है।कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी। विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था। कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन

डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है। सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है। जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

श्रीडूंगरगढ़ महाविद्यालय का वाणिज्य वर्ग का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत...

श्रीडूंगरगढ़ (शुभकरण पारीक)। कस्बे के श्रीडूंगरगढ़ महाविद्यालय का वाणिज्य वर्ग का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है। प्राचार्य विनोद सुथार ने बताया कि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा आयोजित वाणिज्य वर्ग द्वितीय वर्ष व तृतीय वर्ष मुख्य परीक्षाओं में महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है। वाणिज्य तृतीय वर्ष में हर्ष सिंघी प्रथम व दीक्षिता सोनी द्वितीय रही है। तृतीय स्थान कोमल लखोटिया ने हासिल किया है। इसी प्रकार वाणिज्य वर्ग द्वितीय वर्ष में प्रथम राघव सोनी व द्वितीय अमित तापड़िया रहे है। तृतीय स्थान हर्ष करनानी ने हासिल किया है। सभी विद्यार्थियों को प्रबन्ध समिति के सचिव श्याम महर्षि व उपसचिव रामचंद्र राठी ने शुभकामनाएं दी है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक मुद्रक राजेश सक्सेना के लिए एजूकेशनल प्रेस, फड़ बाजार, बीकानेर में मुद्रित तथा युगपक्ष कार्यालय फड़ बाजार बीकानेर से प्रक

एसकेआरएयू वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर ब्रिटन से मिला पेटेंट

किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

हिंदुस्तान से रूबरू

बीकानेर (सुरेश जैन)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके (यूनाइटेड किंगडम-ब्रिटन) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाईके सिंह, सुश्री शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पीके यादव को ये पेटेंट मिला है। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाइअप कर जल्द

ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

बाजरा बिस्कुट पर यूनिवर्सिची को जर्मनी से मिल चुका है पेटेंट

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कान्फ्रेन्स हॉल में सम्बंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की ओर से निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें। विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

भारत में सालाना करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न होता है

सहायक आचार्य डॉ. मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ. अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा-निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है। साथ ही बताया कि जुलाई, 2023 में नीति आयोग की ओर से प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत सालाना करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों की ओर से अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है। जबकि, फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

मशीन फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी साबित होगी

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ. पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम की ओर से पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बावजूद निराकरण नहीं हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय की ओर से बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

फसल को महीनेभर में ही यूके ने दे दिया पेटेंट

सह आचार्य डॉ वाईके सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम-ब्रिटन) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं, लेकिन इस मशीन को एक महीने में ही पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं, उसे ये मशीन छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके से मिला पेटेंट

■ किसान अब अपने खेत में कम लागत से कर पाएंगे फसल अवशेष प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण से भी मिलेगी राहत

■ लोकमत संवाद, बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वाई. के. सिंह, शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगें। विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। साथ ही मशीन के कार्य करने को लेकर बताया कि फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं उसे ये मशीन छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।

सहायक आचार्य डॉ मनमीत कौर ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय को ये पेटेंट मिला है। साथ ही बताया कि जुलाई 2023 में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक वर्किंग पेपर के अनुसार भारत प्रतिवर्ष करीब 650 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है। किसानों द्वारा अधिक फसल पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के चलते फसल अवशेषों को अपशिष्ट मानकर त्वरित निपटान के लिए जला देना आम बात हो गई है।

जबकि फसल अवशेष जलाने से ना केवल महत्वपूर्ण बायोमास का नुकसान होता है बल्कि यह प्रदूषण वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। फसल अवशेष दहन से मृदा की उर्वरता भी कम हो रही है एवं मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर

Date-23.05.2024

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

बीकानेर, 23 मई। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैया कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में परिंडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें।

इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्डा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदस्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

एसकेआरएयू: फसल अवशेष प्रबंधन मशीन को यूके से मिला पेटेंट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है।

कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ. पीके यादव ने यह जानकारी दी। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लंबे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय की ओर से बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है। सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं, लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया। यह मशीन फसल कटने के बाद जो फसल अवशेष रह जाते हैं, उसे भी छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर पूरे क्षेत्र में फैला देती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित होकर फसलों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध करवाता है।

चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं, वह सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी।

पर्यावरण प्रदूषण से मिलेगी राहत

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को मिला पेटेंट

■ जलतेदीप निसं, बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' पर यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिला है। कृषि विश्वविद्यालय की डॉ. मनमीत कौर, डॉ.वाई. के. सिंह, शौर्या सिंह, डॉ. अरुण कुमार एवं डॉ. पी. के. यादव को ये पेटेंट मिला है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन हेतु वर्तमान में जो मशीनें हैं वे सब्सिडी के बाद भी काफी महंगी हैं। लिहाजा आम किसान उसका उपयोग नहीं कर पाता। लेकिन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' मशीन उनसे करीब चार गुना कम कीमत पर ही उपलब्ध हो सकेगी। इस मशीन का व्यावसायिक निर्माण विश्वविद्यालय अपने स्तर पर निजी फर्म के साथ टाईअप कर जल्द ही शुरू करेगा। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि अब पराली एवं अन्य फसल अवशेषों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएगी। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय सचिवालय कॉन्फ्रेंस हॉल में संबंधित वैज्ञानिकों को बुके भेंट कर स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किए जा रहे शोध विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।विदित है कि इससे पूर्व पिछले वर्ष ही एसकेआरएयू को बाजरा बिस्किट पर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी से पेटेंट मिला था। कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डीन डॉ पीके यादव ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लम्बे समय तक शोध के उपरांत 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का डिजाइन तैयार किया गया है जिसे यूनाइटेड किंगडम द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। साथ ही कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन लम्बे समय से देश में ज्वलंत समस्या बनी हुई है। जिसका विभिन्न प्रयासों के बाद भी निराकरण नही हो पा रहा है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा बेहद कम कीमत पर निर्मित मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' आने वाले समय में फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभाव ला सकती है।

सह आचार्य. डॉ वाई.के.सिंह ने बताया कि यूके (यूनाइटेड किंगडम) से पेटेंट मिलने में करीब पांच छह महीने लग जाते हैं लेकिन इस मशीन को एक महीने में पेटेंट प्रदान कर दिया गया।

शक पदम मेहता द्वारा दीपक ऑफसेट प्रिंटर्स, जे-10, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित तथा जलतेदीप कार्यालय ई-287, लालकोठी, जयपुर से प्रकाशित फोनः 2742

24.05.2024

इबादत | (प्रातःकालीन दैनिक) हनुमानगढ़ (राजस्थान) शुक्रवार

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

इबादत न्यूज

बीकानेर, 23 मई। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में पंरिडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्डा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

बीकानेर, (दैनिक खबरां)। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में परिडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें।

इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्ढा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

दैनिक भास्कर बीकानेर ज़िला 24-05-2024

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

बीकानेर | अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में पाळसिये और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ. अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा पाळसिये और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी ई. विपिन लड्ढा, डॉ. पीएस शेखावत, डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. विमला डुकवाल, डॉ. दीपाली धवन, डॉ. आई.पी. सिंह, डॉ. वीर सिंह, डॉ. पीके यादव, डॉ. एके शर्मा, डॉ. दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझुनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

■ **लोकमत संवाद, बीकानेर**

अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में परिंडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें।

इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्ढा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

#AgricultureUniversity

विवि में शुरू हुआ अभियान

कृषि विवि परिसर में परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ. अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है, लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय में परिंडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा।

इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी ई. विपिन लड्डा, अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ. सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ. दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ. आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. पीके यादव सहित अन्य उपस्थित रहे।

कृषि विश्वविद्यायल में पक्षियों के लिये लगाये परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में पंरिडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है। जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्डा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ.पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ.ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

एस.के.आर.ए.यू. में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

बीकानेर, 23 मई (प्रेम) : अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए।

परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है, लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं, साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं।

चुग्गा पात्र में दाना डालते हुए। (प्रेम)

कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में परिंडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है, जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है, साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें।

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं।

साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में पंरिडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है।

जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है।

साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़ पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्ढा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

एसकेआरएयू में पक्षियों के संरक्षण हेतु परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे

सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 23 मई। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में परिंडा एवं चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार, कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में दो दर्जन से ज्यादा परिंडे और चुग्गा पात्र पेड़ों पर बांधे गए। परिंडों को पानी से और चुग्गा पात्र को चुग्गा डालकर भरा गया। कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर काफी हरा भरा है लिहाजा यहां कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। अत्यधिक गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी मुहैय्या कराने को लेकर परिंडे बांधे गए हैं। साथ ही चुग्गा पात्र भी लगाए गए हैं। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय में पंरिडा और चुग्गा पात्र बांधने का अभियान शुरू किया गया है जो गर्मियों में लगातार जारी रहेगा। प्रतिदिन परिंडों में पानी और चुग्गा पात्र में चुग्गा डालना भी सुनिश्चित किया गया है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय स्टॉफ भी अपने घर व घर के आस पास पेड़

पर परिंडे और चुग्गा पात्र बांध कर भीषण गर्मी में पक्षियों के संरक्षण का पुनीत कार्य करें। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी इं. विपिन लड्ढा, अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत, निदेशक प्रसार डॉ सुभाष चंद्र, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, पीजी अधिष्ठाता डॉ दीपाली धवन, आईएबीएम अधिष्ठाता डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पीके यादव, मानव संसाधन विकास निदेशालय निदेशक डॉ ए.के. शर्मा, भू सदृश्यता एवं राजस्व अर्जन अधिष्ठाता डॉ दाताराम समेत श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझूनूं, जैसलमेर और हनुमानगढ़ से आए अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने भी पेड़ों पर पानी के परिंडे और चुग्गा पात्र बांधे।

25.05.2024

UK patent for Bikaner agriculture univ's low-cost stubble management machine

Ashish.Mehta@timesgroup.com

Jaipur: An innovative and affordable stubble chopper-cum-spreader machine, designed by four professors and a student of the Bikaner agriculture university, has secured a United Kingdom (UK) patent. The machine is expected to provide farmers an alternative to other expensive options in the future.

The machine will help farmers manage stubble at a significantly lower cost and will be available in the Indian market in the range of Rs 40,000-60,000 once it is locally approved. Typically, such machines cost between Rs 2 and Rs 3 lakh.

Scientists of the Swami Keshwanand Rajasthan Agricultural University (SKRAU), which includes vice-chancellor Dr Arun Kumar, received the patent from the UK for the 'stubble-chopper-cum-spreader', a crop residue management machine.

Other than Dr Arun Kumar, Dr Manmeet Kaur, Dr Yogendra Kumar Singh, Dr Pramod Kumar Yadav, and student Shaurya Singh of the agricultural university worked on this project.

TOI spoke to vice-chancellor Dr Arun Kumar on the achievement: "Machines currently available for crop residue management are quite expensive even after subsidy. A common farmer cannot afford it. But our machine will be available at a price almost four times less. We have also applied for an India patent."

"Research and projects done by our scientists have made the university famous at the global level. Earlier last year, SKRAU got a patent for a millet biscuit from the Federal Republic of Germany," he said.

▶Continued on P 4

CHEAPER ALTERNATIVE FOR FARMERS

File photo of stubble burning at Tibbi village of Hanumangarh

- Innovative & affordable stubble chopper-cum-spreader machine designed by four professors and a student of Swami Keshwanand Swami Rajasthan Agricultural University (SKRAU)
- Indian market price of machine in the range of ₹40,000-60,000, which is four times lesser than similar machines that cost between ₹2 and ₹3 lakh currently
- Vice-chancellor Dr Arun Kumar, Dr Manmeet Kaur, Dr Yogendra Kumar Singh, Dr Pramod Kumar Yadav, and student Shaurya Singh worked on project

Farmers of other states to benefit: Yadav

▶Continued from P1

Jaipur: University dean Dr P K Yadav, who was part of the project, said, "Crop residue management has been a burning problem in the country for a long time. Our low-cost machine will have a major impact in the future. Farmers from other states too will benefit from it."

Dr Y K Singh said that while it took about five to six months to get a patent from the UK, the patent for this machine was granted in a month. "The stubble after it's cut will also become organic fertilizer," Singh said.

According to assistant professor Dr Manmeet Kaur, India produces about 650 million tonnes of crop residue every year. "Since farmers want to produce more crops, it has become common to burn crop residue for quick disposal. This machine will bring a big change," she said.

Suresh Ji PRO SKRAU

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-28.05.2024

एसकेआरएयू: एमबीए में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाई

बीकानेर, 28 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एमबीए (2024-26 बैच) में प्रवेश हेतु ऑनलाइन फार्म भरने की अंतिम तिथि 10 जून तक बढ़ा दी गई है। वहीं ऑफलाइन फॉर्म जमा करवाने की अंतिम तिथि 20 जून कर दी है। आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि विद्यार्थियों की मांग के चलते कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एग्री बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए करने हेतु फॉर्म भरने की अंतिम तिथि को बढ़ाया है।

डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि संस्थान के एमबीए पाठ्यक्रम में कृषि या संबंधित विषयों में स्नातक या अंतिम वर्ष का विद्यार्थी जिसके पास किसी भी राष्ट्रीय प्रबंधन परीक्षा (कैट, मैट, सी-मैट, जैट आदि) का स्कोर कार्ड अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रमाण हो, ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकता है। प्रवेश संबंधित और अधिक जानकारी संस्थान की अधिकारिक वेबसाइट www.iabmbikaner.org या विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.raubikaner.org से प्राप्त की जा सकती है। प्रवेश की जानकारी के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईएबीएम में कार्यालय समय में आकर अथवा दूरभाष नंबर 0151- 2252981 पर कॉल करके अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

12:45 pm

एसकेआरएयू एमबीए में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाई

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एमबीए (2024-26 बैच) में प्रवेश हेतु ऑनलाइन फार्म भरने की अंतिम तिथि 10 जून तक बढ़ा दी गई है। वहीं ऑफलाइन फॉर्म जमा करवाने की अंतिम तिथि 20 जून की गई है।

आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि विद्यार्थियों की मांग के चलते कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एग्री बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए करने हेतु फॉर्म भरने की अंतिम तिथि को बढ़ाया है।

डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि संस्थान के एमबीए पाठ्यक्रम में कृषि या संबंधित विषयों में स्नातक या अंतिम वर्ष का विद्यार्थी जिसके पास किसी भी राष्ट्रीय प्रबंधन परीक्षा (कैट, मैट, सी-मैट, जैट आदि) का स्कोर कार्ड अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रमाण हो, ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकता है। प्रवेश संबंधित और अधिक जानकारी संस्थान की अधिकारिक वेबसाइट www.iabmbikaner.org या विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.raubikaner.org से प्राप्त की जा सकती है।

प्रवेश की जानकारी के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईएबीएम में कार्यालय समय में आकर अथवा दूरभाष नंबर 0151- 2252981 पर कॉल करके अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

एसकेआरएयू : एमबीए में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाई

बीकानेर, 28 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एमबीए (2024-26 बैच) में प्रवेश हेतु ऑनलाइन फार्म भरने की अंतिम तिथि 10 जून तक बढ़ा दी है। वहीं ऑफलाइन फॉर्म जमा करवाने की अंतिम तिथि 20 जून की है। आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी. सिंह ने बताया कि विद्यार्थियों की मांग के चलते कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईएबीएम) से एग्री बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए करने हेतु फॉर्म भरने की अंतिम तिथि को बढ़ाया है। सिंह ने बताया कि संस्थान के एमबीए पाठ्यक्रम में कृषि या संबंधित विषयों में स्नातक या अंतिम वर्ष का विद्यार्थी जिसके पास किसी भी राष्ट्रीय प्रबंधन परीक्षा (कैट, मैट, सी-मैट, जैट) का स्कोर कार्ड अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रमाण हो, ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकता है। प्रवेश संबंधित और अधिक जानकारी संस्थान की अधिकारिक वेबसाइट या विश्वविद्यालय की वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है। प्रवेश की जानकारी के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईएबीएम में कार्यालय समय में आकर अथवा दूरभाष नंबर 0151-2252981 पर कॉल करके अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

एसकेआरएयू : एमबीए में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाई

■ लोकमत संवाद, बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान से एमबीए (2024-26 बैच) में प्रवेश हेतु ऑनलाइन फार्म भरने की अंतिम तिथि 10 जून तक बढ़ा दी गई है। वहीं ऑफलाइन फॉर्म जमा करवाने की अंतिम तिथि 20 जून कर दी है। आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि विद्यार्थियों की मांग के चलते कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान से एग्री बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए करने हेतु फॉर्म भरने की अंतिम तिथि को बढ़ाया है। डॉ आई.पी.सिंह ने बताया कि संस्थान के एमबीए पाठ्यक्रम में कृषि या संबंधित विषयों में स्नातक या अंतिम वर्ष का विद्यार्थी जिसके पास किसी भी राष्ट्रीय प्रबंधन परीक्षा स्कोर कार्ड अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रमाण हो, ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकता है। प्रवेश संबंधित और अधिक जानकारी संस्थान की अधिकारिक व ` ब स ा इ ट www.iabmbikaner.org या विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.raubikaner.org से प्राप्त की जा सकती है। प्रवेश की जानकारी के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईएबीएम में कार्यालय समय में आकर अथवा दूरभाष नंबर 0151- 2252981 पर कॉल करके अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-30.05.2024

2 जून को 15 केन्द्रों पर आयोजित होगी जेट परीक्षा

परीक्षा केन्द्र पर परीक्षार्थियों के प्रवेश से परीक्षा समाप्त होने तक रहें अलर्ट- डॉ अरूण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू

बीकानेर, 30 मई। कृषि संकाय के अंतर्गत राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु प्रति वर्ष आयोजित होने वाली जेट (ज्यॉइंट एंट्रेस टेस्ट- संयुक्त प्रवेश परीक्षा) परीक्षा इस बार 2 जून को शहर के 15 केन्द्रों पर आयोजित होगी। विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईएबीएम कॉन्फ्रेंस हॉल में गुरूवार को 15 परीक्षा केन्द्रों के केन्द्राधीक्षकों, पर्यवेक्षकों और उड़ना दस्ता अधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि परीक्षा केन्द्र में परीक्षार्थी के प्रवेश से लेकर परीक्षा समाप्त होने तक अधिकारीगण सतर्क रहें और अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन अच्छे से करें। ताकि परीक्षा को निष्पक्ष रूप से संपन्न करवा सकें। कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी ने कहा कि चाहे चुनाव हो या परीक्षा, दोनों ही संवेदनशील मामले है। हर स्तर पर सावधानी जरूरी है। परीक्षा आयोजन में पुलिस और प्रशासन की ओर से भी सहयोग किया जाएगा। साथ ही कहा कि गर्मी के मौसम में कार्मिकगण खुद का भी ध्यान रखें।

वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि ये मानकर ना चलें कि हमने बहुत परीक्षा करवाई है। परीक्षा से संबंधित सभी दिशा निर्देशों को अच्छे से कई बार पढ़ लें ताकि परीक्षा को पारदर्शिता व शुचिता के साथ संपन्न करवाया जा सके। आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी.सिंह ने कहा कि परीक्षा को लेकर नियमों का कड़ाई से पालना सुनिश्चित की जाए ताकि कोई डमी कैंडिडेट परीक्षा में ना बैठ पाए।

इससे पूर्व एसकेआरएयू के परीक्षा नियंत्रक और जेट परीक्षा समन्वयक डॉ राजेन्द्र सिंह राठौड़ ने मंच संचालन करते हुए बताया कि जेट परीक्षा को लेकर जिला मुख्यालय पर एसकेआरएयू में आईएबीएम, राजुवास, सार्दुल व फोर्ट स्कूल, महारानी स्कूल व कॉलेज समेत कुल 15 परीक्षा केन्द्र बनाए गए हैं। उन्होने बताया कि जेट परीक्षा का आयोजन कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर कर रहा है। बीकानेर में स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है। सहायक आचार्य डॉ अर्जुन यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर
Date-30.05.2024

गुलाबी सुंडी और टिड्डी नियंत्रण की जानकारी किसानों तक समय पर पहुंचे ताकि नियंत्रण किया जा सके- डॉ. अरुण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू

गुलाबी सुंडी और टिड्डी का नियंत्रण एवं प्रबंधन पर दो दिवसीय संभाग स्तरीय कार्यशाला संपन्न

कार्यशाला में बीकानेर, चूरू व जैसलमेर जिलों के 70 से अधिक कृषि अधिकारी रहे मौजूद

"यदि पिछले साल के कपास डंठल से टिंडा (बॉल) अलग कर जला दिया जाए, तो गुलाबी सुंडी प्रकोप को 50 फीसदी तक कम करना संभव"

बीकानेर, 30 मई। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में "गुलाबी सुंडी और टिड्डी नियंत्रण एवं प्रबंधन" विषय पर 29 व 30 मई को दो दिवसीय संभाग स्तरीय तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान जयपुर द्वारा प्रायोजित एवं अतिरिक्त निदेशक कृषि (विस्तार) बीकानेर द्वारा आयोजित इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि एसकेआरएयू कुलपति डॉ. अरुण कुमार थे। विशिष्ट अतिथि राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान के निदेशक डॉ. ईश्वर लाल यादव, कृषि आयुक्तालय जयपुर के अतिरिक्त निदेशक कृषि आदान डॉ. सुवालाल जाट थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड बीकानेर के अतिरिक्त निदेशक कृषि डॉ. सुरेन्द्र सिंह शेखावत ने की। कार्यशाला में जयपुर से इस प्रशिक्षण के समन्वयक उप निदेशक श्री विनोद कुमार सहित बीकानेर, चूरू एवं जैसलमेर जिलों के कृषि अधिकारी से लेकर अतिरिक्त निदेशक स्तर तक के 70 से अधिक कृषि अधिकारी मौजूद रहे।

मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि गुलाबी सुंडी और टिड्डी नियंत्रण की जानकारी किसानों तक समय पर पहुंचे ताकि इस पर नियंत्रण किया जा सके। उन्होंने कहा कि आईआईटी रुड़की, खड़गपुर, राजस्थान से एआई के जरिए भी इसके नियंत्रण में सहयोग लिया जा सकता है।

राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान के निदेशक डॉ. ईश्वर लाल यादव ने बताया कि यदि किसान पिछली कपास की खेती से बचे हुए डंठलों में से केवल खाली टिंडो (बॉल) को जला दें तो गुलाबी सुंडी का प्रकोप आधा किया जा सकता है। पिछले साल हरियाणा और पंजाब में ऐसा ही किया गया था। उन्होंने बताया कि कपास निकालने के बाद भी गुलाबी सुंडी का कीड़ा कपास के टिंडे में जिंदा रहता है और मौसम अनुकूल होते ही बाहर निकल आता है।

कृषि आयुक्तालय जयपुर के अतिरिक्त निदेशक कृषि आदान डॉ. सुवालाल जाट ने टिड्डी नियंत्रण एवं प्रबंधन पर व्यापक एवं महत्वपूर्ण व्यावहारिक जानकारी दी। इससे पहले अतिरिक्त निदेशक कृषि डॉ. सुरेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि विभाग गुलाबी सुंडी एवं टिड्डी नियंत्रण को लेकर पहले से ही सतर्क हो गया है।

सहायक निदेशक श्री सुभाष बिश्नोई ने बताया कि दो दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत तकनीकी सत्र में टिड्डी नियंत्रण विभाग बीकानेर के डॉ.एनके भार्गव, पीएयू लुधियाना से सेवानिवृत्त प्रो. डॉ. जोगिंदर सिंह, एसकेआरएयू

बीकानेर के कीट विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वीएस आचार्य, कीट विज्ञानी डॉ. केशव मेहरा, सिरसा से आए डॉ. ऋषि कुमार, प्रधान कीट विज्ञानी डॉ. एचएल देसवाल, प्रो. अमर सिंह गोदारा, प्रो. बीडीएस नाथावत ने पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से तकनीकी जानकारी दी।

कार्यक्रम का यूट्यूब के माध्यम से लाइव प्रसारण किया गया। कार्यशाला में बीकानेर, चूरू, जैसलमेर जिलों से कृषि विस्तार, उद्यानिकी, आत्मा,सिंचित क्षेत्र विकास, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, एटीसी, क्यूसी, कीटनाशक परीक्षण लैब आदि के अधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन कृषि अधिकारी श्री मुकेश गहलोत ने किया।